मॉयल
MOIL

मॉयल भारती

अंक 13 : अप्रैल - सितंबर 2025

मॉयल लिमिटेड, मॉयल भवन, 1- ए , काटोल रोड, नागपुर - 440013

62nd AGM
11th Sept. 2024
MOIL LIMITED
Adding Strength to Steel

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	पेज क्र.
01	अनुक्रमाणिका	01
02	संदेश	02-07
03	संपादकीय	08
04	राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम	09-10
05	राजभाषा नियम, 1976	11-13
06	स्वच्छता-दिनेश कनोजे देहाती	13
07	अंग्रेजी हिंदी शब्द	14-15
08	अशुद्ध एवं शुद्ध शब्द	16
09	टिप्पणी लेखन	17
10	आम प्रयोग के पदबंध	18-19
11	राष्ट्र हित - दिनेश देहाती	19
12	आंशिक पर्यायवाची सूक्ष्म अर्थभेदी शब्द	20-22
13	अशुद्ध और शुद्ध वाक्य	23-24
14	ई-सरल हिंदी वाक्यांश	25-26
15	अनुवाद का महत्व-अनिल घरडे	27-28
16	अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी	29-30
17	राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलन	31
18	खान स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आयोजित कार्यक्रम	32
19	हिंदी मासिक प्रतियोगिता	33
20	कार्यस्थलों का वातावरण-पूजा वर्मा	34
21	टूटते सपनो की आवाज - अनिता लांडगे	35
22	डॉ बाबसाहेब आंबेडकर का जीवन चरित्र - उज्वला वानखेडे	36-37
23	मां - उज्वला वानखेडे	37
24	थिंक पॉजिटिव - सुखराम ब्रम्हे	38
25	एक आखिरी उम्मीद - जाहिद खान	39
26	स्वास्थ के प्रति जागरुकता - मो. अफरोज अख्तर	40
27	समय का सदुपयोग - हेमलता साखरे	41
28	पत्थर की गुंज - अनिल घरडे	42
29	शाम बेच दी है - हेमलता साखरे	42
30	गांव की छांव - नितीन रोकडे	43
31	भारत की शौर्य गाथा - योगेश करमरकर	44
32	गाँव और शहर - शमा खोब्रागडे	45
33	निला बैग - नितीन कुकडे	46
34	धरती की पुकार - नरेश गायधने	47
35	राजनीति का बदलता स्वरुप - नितीन मालेवार	48
36	प्रकृति की चमक - नीता गुजर	49
37	सपनों का सौदागर - सोनू वासनिक	50
38	दूध का दाम - विजय कांबले	51
39	भारत का सूरज - अंकुर पासी	52
40	खनन मे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस- संकटराम ब्रम्हवंशी	53-55
41	साधु और लकडहारे - लक्ष्मी चौबे	56
42	मॉयल - समाचार पत्र की कुछ झलकियाँ	57-58
43	यादगार पल	59-60

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1- ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

अजित कुमार सक्सेना

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हो रही हैं कि मॉयल लिमिटेड, अपने 63वें स्थापना दिवस के अवसर पर राजभाषा हिन्दी गृह पत्रिका ''मॉयल भारती'' का 13वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

देश के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर अब तक देश की प्रगति में हिन्दी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मानव सभ्यता के विकास में भाषा एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। भाषा हम सभी के विचारों, चिंतन, आवश्यकताओं एवं भावों को शब्दों में परिवर्तित करने का सर्वोत्तम साधन है जो मनुष्य के सामाजिक जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान काफी महत्त्वपूर्ण होता है। हिन्दी में रचनात्मक लेखन, राजभाषा हिन्दी से संबधित नीति-नियमों की नवीनतम जानकारी, राजभाषा गतिविधियों और प्रेरक प्रसंगों के प्रकाशन आदि से कार्यालयों में हिन्दी में कामकाज करने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार होता है।

मेरा विश्वास है कि ''मॉयल भारती'' से संस्थान की गरिमा में वृद्धि होगी। अतः पत्रिका के नवीनतम अंक के प्रकाशन के संदर्भ में संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को उनके सजग प्रयास के लिए बधाई।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

अजित कुमार सक्सेना

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1- ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

राकेश तुमाने
निदेशक (वित्त)

संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 63वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि मॉयल लिमिटेड, राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका ''मॉयल भारती'' के 13वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

राजभाषा हिंदी हमारे देश के विशाल भू-भाग में बोली, लिखी एवं समझी जाने वाली सरल एवं सुबोध भाषा है। हिंदी हमारे देश की संपर्क भाषा, राजभाषा और सबसे अधिक जनभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। अतः यह हमारा संवैधानिक दायित्व और नैतिक कर्तव्य है कि हम हिंदी को अधिकाधिक अपने विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं।

विभागीय पत्रिकाओं का प्रकाशन साहित्य सृजन का एक मंच है। इससे अधिकारियों व कर्मचारियों के सृजनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा मिलता है। इनके प्रकाशन से विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विचारों, भावनाओं और साहित्यिक रूचि को प्रकट करने का सशक्त माध्यम मिलता है, जिससे विभाग में कार्यरत अधिकारियों व कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति रूचि बढ़ती है।

पत्रिका के 13वें अंक के लिए अनंत शुभकामनाएं ।

राकेश तुमाने

उषा सिंह
निदेशक (मा.सं.)

संदेश

प्रिय हिन्दी प्रेमियों,

आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 63वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता और गौरव की अनुभूति हो रही है कि मॉयल लिमिटेड, राजभाषा अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका ''मॉयल भारती'' का 13वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन हिंदी के बढ़ते प्रयोग के प्रति मॉयल की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। दूसरी ओर, यह हमें हिंदी में अपना कार्य अधिकाधिक करने के लिए प्रेरित भी करता है।

हिंदी ने संपर्क भाषा के रूप में राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हर भारतीय को अपनी मातृभाषा हिंदी पर गर्व है, जो एक अत्यंत सरल, समृद्ध और सशक्त भाषा है।

मुझे यह साझा करने में खुशी हो रही है कि हमारे अधिकांश अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी को अपनी मातृभाषा मानकर, अपना ज्यादा से ज्यादा काम हिंदी में करते है।

मैं राजभाषा पत्रिका ''मॉयल भारती'' के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों का पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

उषा सिंह

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1- ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

एम एम अब्दुल्ला
निदेशक (उ. एवं यो.)

संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 63वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हो रही हैं कि मॉयल लिमिटेड, अपने 63वें स्थापना दिवस के अवसर पर राजभाषा हिन्दी गृह पत्रिका मॉयल भारती का 13वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

राजभाषा हिन्दी सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। यह भारत के जन–जन के मन की भाषा है। अतः राजभाषा हिन्दी में कार्य करना हमारा नैतिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है। सरकारी कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को गति देने तथा अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए पत्रिका का प्रकाशन एक उचित माध्यम है। पत्रिका प्रकाशन का मूल उद्देश्य विभिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियों के माध्यम से हमारी राजभाषा हिन्दी के उपयोग को सुदृढ़ करना है ।

मैं पत्रिका के प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

एम एम अब्दुल्ला

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1- ए, काटोल रोड,
नागपुर- 440013

रश्मि सिंह
निदेशक (वाणिज्य)

संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 63वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हो रही हैं कि मॉयल लिमिटेड, अपने 63वें स्थापना दिवस के अवसर पर हिन्दी गृह पत्रिका मॉयल भारती का 13वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

हिंदी हमारी सभ्यता और संस्कृति का महत्वपूर्ण आयाम है। हिंदी की विशेषता यह है कि यह सरल, सुंदर और सभी वर्गों के लिए सुलभ है। यह भाषा संवाद, विचार और भावनाओं को सहजता से व्यक्त करने का एक आदर्श माध्यम है।

हिंदी को बढ़ावा देने से हम अपनी संस्कृति और पहचान को संजो सकते हैं। यह हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपनी भाषा को न केवल बोलें, बल्कि इसे हर क्षेत्र में प्रचलित करें, इसमें कार्य करें एवं इसे अपनी समृद्ध धरोहर के रूप में आगे बढ़ाएं।

हम हिंदी को अपनी कार्यशैली में अधिक से अधिक स्थान दें और इसे सशक्त बनाएं। राजभाषा, हमारे देश की संस्कृति, सभ्यता और एकता का प्रतीक है और इसके निरंतर विकास में सभी का सहयोग एवं योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मैं ''मॉयल भारती'' पत्रिका के प्रयासों के लिए बधाई देती हूँ और इसकी सफलता की कामना करती हूँ।

रश्मि सिंह
रश्मि सिंह

बी. डी. गजघाटे
मुख्य सतर्कता अधिकारी

संदेश

प्रिय साथियों,

आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 63वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।।

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हो रही हैं कि मॉयल लिमिटेड, अपने 63वें स्थापना दिवस के अवसर पर हिन्दी गृह पत्रिका 'मॉयल भारती' का 13वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

राजभाषा प्रयोग के प्रति अनुकूल वातावरण बनाने में गृह पत्रिकाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार हमारी गृह पत्रिकाएं न केवल राजभाषा कार्यान्वयन में अपना योगदान देती हैं, बल्कि अधिकाधिक कर्मचारियों तक हमारी पहुँच को भी सुलभ बनाती हैं। मॉयल भारती कार्मिकों के बीच संचार का एक सशक्त माध्यम है। इससे कार्मिकों की लेखन प्रतिभा को समझने का अवसर तो मिलता ही है, हिंदी में लिखने का संकोच भी समाप्त होता है जिससे राजभाषा प्रयोग को बढ़ावा मिलता है।

गृह पत्रिकाएं किसी भी संगठन की कार्य संस्कृति का दर्पण होती है। ये पत्रिकाएं मुख्यालय एवं खान में काम कर रहे कार्मिकों के ज्ञान को परस्पर साझा करने का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

बी. डी. गजघाटे

संपादकीय

संपादक मंडल

अजित कुमार सक्सेना
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

उषा सिंह
निदेशक (मानव संसाधन)

नितीन पागनीस
संयुक्त महाप्रबंधक (कार्मिक)

एन. डी. पाण्डेय
कंपनी सचिव

पूजा वर्मा
राजभाषा अधिकारी

प्रिय पाठकगण,

यह बहुत गर्व की बात है कि मॉयल लिमिटेड के 63वें स्थापना दिवस पर हम ''मॉयल भारती'' पत्रिका के 13वें अंक का प्रकाशन कर रहे है।

पत्रिका मे राजभाषा के कार्यान्वयन की सरलता के लिए दैनिक उपयोग जैसी सरल-सहज सामग्री को भी सम्मिलित किया गया है। मॉयल की खदानों एवं मुख्यालय की रोचक गतिविधियों को शामिल करते हुए इस अंक को अधिक रोचक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक बनाया गया है। इस अंक में मॉयल कर्मियों की साहित्यिक अभिव्यक्तियों को भी स्थान दिया गया है। जिसमे कहानी कविताएं और स्लोगन का समावेश है।

इस पत्रिका के माध्यम से हमारा उद्देश्य अपनी यात्रा को साझा करना और सभी कर्मचारियों के निरंतर योगदान और टीम वर्क के लिए उनका आभार व्यक्त करना है। मुझे आशा है कि यह संस्करण अपने सभी पाठकों के लिए जानकारी पूर्ण और प्रेरणादायक साबित होगा।

हम आपके उत्साह और समर्थन की अपेक्षा रखते हैं और आशा करते है कि यह अंक आपके दिल को छू सके। कृपया अपने विचार और सुझाव हमारे साथ साझा करें ताकि हम निरंतर बेहतर से बेहतर बनाने की दिशा में अग्रसर रह सकें।

जय हिन्द! जय हिन्दी !

पूजा वर्मा
राजभाषा अधिकारी

अस्वीकरण – पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के है। कंपनी का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी लेखक स्वयं जिम्मेदार है।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 60% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालयांव्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ईपुस्तक,ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए	100%	100%	100%
13.	i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे/सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
	ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम) वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	30% (न्यूनतम)
14.	राजभाषा संबंधी बैठके (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठके वर्ष में 2 बैठक (प्रति छमाही एक), वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	45%	35%	25%
			(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, क क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, ख क्षेत्र में 30% और ग क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए ।	

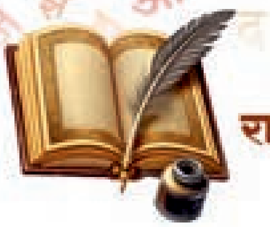

राजभाषा नियम,1976

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976

(यथा संशोधित, 1987, 2007, तथा 2011)

सा.का.नि.1052--राजभाषा अधिनियम,1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात:-

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ--

क. इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 है।

ख. इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

ग. ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं-- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो:-

क. 'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है:

ख. 'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थात:-

ग. केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

घ. केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और

ङ. केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय:

च. 'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है:

छ. 'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है:

ज. 'हिन्दी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है:

झ. 'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

ट. 'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

ठ. 'क्षेत्र ग' से खंड (झ) और (ट) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

ड. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है।

3. राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि-

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से--

अ. क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा: परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे;

ब. क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

3. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

4. उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र क या ख में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं। परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे।

4. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि–

केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

अ. केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे:

ब. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न है, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

स. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'गमें स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं, परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे;

द. क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं, परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में में पत्रादि पत्रा भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे;

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि--

I. क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

II. क्षेत्र 'गः में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा; परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

5. हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर--

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे।

6. हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग–

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही ही में तैयार की जाती है, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती है।

7. आवेदन, अभ्यावेदन आदि–

1. कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।

2. जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।

3. यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

8. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना –

1. कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

2. केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

3. यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

4. उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा, जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा।

9. हिन्दी में प्रवीणता–

यदि किसी कर्मचारी ने–

अ. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है.या

ब. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

स. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है. तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

10. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

1.अ. यदि किसी कर्मचारी ने-

(i) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

(ii) केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीक्षा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

(iii) केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

ब.यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

2. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

3. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

4. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

11. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

12. अनुपालन का उत्तरदायित्व-

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह--

(i). यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और

(ii). इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

स्वच्छता

हो प्रत्येक व्यक्ति में इतनी तो दक्षता,
वह अपने परिसर में रखें स्वच्छता।
व्यक्ति का विवेक और मौलिक प्रयास,
साफ सफाई रखें अपने आसपास,
स्वास्थ्य और वातावरण का रखें ध्यान,
आवश्यक है इंसान को साफ-सुथरी स्वांस।
भविष्य का मंथन और वर्तमान की विद्वता।
हो प्रत्येक व्यक्ति में इतनी तो दक्षता।
सुनो, मल मूत्र और कचरे का ढेर,
ये सब बिमारी फैलाते हैं देर सबेर,
दवा लेने से अच्छा है हम हों सावधान,
सफाई का मुल्य जाने किए बिना देर।
सफाई को करें उन्नत तो जीवन में उन्नता।
हो प्रत्येक व्यक्ति में इतनी तो दक्षता।
सफाई आदेश नहीं हमारी जिम्मेदारी है,
सफाई की प्रशंसक तो दुनिया सारी है।
सफाई से रहता सदैव सबका मन प्रसन्न,
प्रदूषण नियंत्रण से दूर जाती बिमारी है।
भीड़ से अलग हो दिखाई दे भिन्नता,
हो प्रत्येक व्यक्ति में इतनी तो दक्षता।

दिनेश कनोजे देहाती
वरिष्ठ चार्जहैंड (मेकेनिकल)

अंग्रेजी हिंदी शब्द

अंग्रेजी	हिंदी	अंग्रेजी	हिंदी
Adjourned-sine-die	अनिश्चित काल के लिए स्थगित	Incidental charges	प्रासंगिक व्यव
Addition and alteration	परिवर्धन और परिवर्तन	In compliance with	के पालानार्थ,
Addressee	प्रेषिति	Inconclusive	अपूर्ण, अधूरी
Adequate	पर्याप्त, योग्य	In connection with	के संबंध में
Adhoc Committee	तदर्थ समिति	Lein	पुन: ग्रहणाधिकार
Adjudication	न्याय निर्णयन	Liberalisation	उदारीकरण
Admissible	स्वीकार्य	Lieu of	के बदले, के एवज में
Admitted to Hearing	सुनवाई के लिए स्वीकृत	Limit	अवधि, मर्यादा, सीमा
Adverse remark	प्रतिकुल टिप्पणी	Litigation	वाद, मुकदमेबाजी,
Adult Education	प्रौढ शिक्षा	Loan	ऋण, उधार
Advertisement	विज्ञापन	Incharge	कार्यप्रभारी
Advance	पेशगी, उन्नति	Local Body	स्थानीय निकाय
Adverse remark	प्रतिकूल प्रविष्टि	Local	स्थानीय
Advise accordingly	तद्नुसार सलाह दे	Memorandum	ज्ञापन
Aforesaid	पूर्वोक्त	Merit Rating	गुणक्रम निर्धारण
Clause	उपधारा	Mineral	खनिज
Code	संहिता, संग्रह, संकेत	Minimum Wages	न्यूनतम मजदूरी
Collective Bargaining	सामूहिक सौदा	Noted	लिख लिया गया
Come into effect	लागू होना, प्रभावी होना	Notice	सूचना
Competent Authority	सक्षम प्राधिकारी	To invite Attention	ध्यान आर्कषित करना
Commence	आरंभ करना	Notice of Demand	मांग की सूचना
Collaboration	सहयोग	Notification	विज्ञप्ति, अधिसूचना
Comment	आलोचना, टीका	On behalf of	की ओर से
Commercial	वाणिज्य संबंधी	Terms of reference	विचारार्थ विषय
Commission	आयोग	Operator	चालक
Committee	समिति	Out and Out	पूर्णत:
Commute	बदलना	Out of Order	बिगड़ा हुआ
Compare	मिलान करना	Out of Stock	समाप्त
Check & Put up	जांच करके प्रस्तुत	Out turn	उत्पादन, निकासी
Measurement Book	माप पुस्तक	Top Priority	प्राथमिकता
In anticipation of approval	अनुमोदन की प्रत्याशा में	Delegation of Power	शक्तियों का प्रत्यायोजन

अंग्रेजी हिंदी शब्द

अंग्रेजी	हिंदी	अंग्रेजी	हिंदी
Delegation	प्रतिनिधी बनाकर भेजना	Permit	अनुमति
Deficiency	अल्पता, न्यूनता	Personal File	वैयक्तिक मिसिल
Delete	निकाल देना, काटना	Personal Pay	वैयक्तिक वेतन
Define	परिभाषा करना	Reconstitution	पुनर्गठन
Demi Official	अर्द्ध सरकारी	Redressal	निवारण करना
Demisedi	पट्टे पर दी गई भूमि	Red-tapism	लाल फीताशाही
Delay in submission	प्रस्तुत करने में देरी	Reference	संदर्भ
Estimated	स्थापन, कर्मचारी वर्ग	Refuse	अस्वीकृत करना
Eviction	निष्कासन	Register	पंजी, रजिस्टर
Evidence	साक्ष्य, गवाह	Seen	देख लिया
Ex-parte Enquiry	एक तरफा जांच	Security	प्रतिभूति
Final Payment	अंतिम भुगतान	Seniority	वरीयता
Findings	निष्कर्ष	Service Book	सेवा पुस्तक
Firmly	दृढ़तापूर्वक	Settlement	समझौता
First Aid	प्राथमिक उपचार	Shape	आकार
Fit	योग्य, उचित	Share	भाग, अंश
First Information Report	प्रांरभिक सूचना	Share Holder	अंशधारी
Gross Negligence	अत्याधिक उपेक्षा, भारी लापरवाही	Shift	पाली
High Power Committee	उच्च शक्ति समिति	Short Title	संक्षिप्त नाम
Grateful	आभारी	Show Cause Notice	कारण बताओ नोटिस
Grant-in-aid	सहायक अनुदान	Sick Attendant	रोगियों का परिचर
Growth	वृद्धि, बढ़वार	Sick Leave	बीमारी की छुट्टी
Guarantee	प्रत्याभूति	Notice in writing	लिखित सूचना
Guidance	मार्गदर्शन	To the best of my knowledge	जहां तक मुझे पता है
High Court	उच्च न्यायालय	To the contrary	इसके प्रतिकूल
Highlights	विशेषताएं, प्रमुखताएं	To the point	विषयानुकूल
Grant of Leave	छुट्टी की स्वीकृति	On Deputation	प्रतिनियुक्ति पर
Hunger Strike	भूख हड़ताल	Toll Tax	पथकर, मार्गकर
Per Capita Income	प्रति व्यक्ति आय	Top Most	सर्वोच्च
Per Capita Consumption	प्रति व्यक्ति उपभोग	To Press	जोर देना

अशुद्ध एवं शुद्ध शब्द

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
अप्रसंगिक	अप्रासंगिक
अनाधिकार	अनधिकार
अनेकों	अनेक
अन्तराष्ट्रीय	अन्तरराष्ट्रीय
उज्वल	उज्ज्वल
चिन्ह	चिह्न
पूज्यनीय	पूजनीय
पुरुस्कार	पुरस्कार
सप्ताहिक	साप्ताहिक
अतिश्योक्ति	अतिशयोक्ति
आर्शीवाद	आशीर्वाद
रूपया	रुपया
विरहणी	विरहिणी
शुश्रुषा	शुश्रूषा
सम्राज्य	साम्राज्य
शारिरिक	शारीरिक
अध्यात्मिक	आध्यात्मिक
निरपराधी	निरपराध
प्रमाणिक	प्रामाणिक
राजनैतिक	राजनीतिक
सौन्दर्यता	सुन्दरता
केन्द्रिय	केन्द्रीय
सौजन्यता	सौजन्य
अन्तर्ध्यान	अन्तर्धान
उपलक्ष	उपलक्ष्य
घनिष्ट	घनिष्ठ
अत्याधिक	अत्यधिक
अक्षामी	आगामी
वाल्मीकी	वाल्मीकि
बिमार	बीमार
अध्यन	अध्ययन
मैथली	मैथिली
पुन्य	पुण्य
संसारिक	सांसारिक

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
प्रोद्योगिकी	प्रोद्यौगिकी
भगीरथी	भागीरथी
रावन	रावण
पहूँचना	पहुँचना
महत्वपूर्ण	महत्त्वपूर्ण
उपरोक्त	उपर्युक्त
उन्नती	उन्नति
परिस्थिती	परिस्थिति
प्रसंशा	प्रशंसा
भैय्या	भैया
परिक्षा	परीक्षा
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी
सुस्वागत	स्वागत
शताब्दि	शताब्दी
निर्दोषी	निर्दोष
निर्दयी	निर्दय
निर्गुणी	निर्गुण
सन्यासी	संन्यासी
श्रीमति	श्रीमती
कृप्या	कृपया
इंजनियरिंग	इंजीनियरिंग
ब्लाग	ब्लॉग
बाक्स	बॉक्स
पन्डित	पण्डित
विन्डो	विण्डो
फॉन्ट	फॉण्ट
कल्ब	क्लब
दवाईयाँ	दवाइयाँ
मोबाईल	मोबाइल
हस्पताल	अस्पताल
आईना	आइना
आईपैड	आइपैड
विकीपीडिया	विकिपीडिया
गल्ती	गलती

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
श्रृंगार	शृंगार
ग्यान	ज्ञान
स्त्रोत	स्रोत
लिनेक्स	लिनक्स
शिर्षक	शीर्षक
सुरक्षीत	सुरक्षित
स्मसान	श्मशान
सन्मान	सम्मान
स्वास्थ	स्वास्थ्य
प्राप्ती	प्राप्ति
तृप्ती	तृप्ति
शक्ती	शक्ति
अतिथी	अतिथि
पुर्व	पूर्व
काफि	काफी
लागु	लागू
टुल्स	टूल्स
गुरू	गुरु
हात	हाथ
वापिस	वापस
पढाई	पढ़ाई
अधार	आधार
ग्रहणी	गृहिणी
आर्दश	आदर्श
दिवार	दीवार
जबाब	जवाब
दांत	दाँत
नर्क	नरक
पती	पति
उपर	ऊपर
चढना	चढ़ना
पत्नि	पत्नी
धोका	धोखा

टिप्पणी लेखन

कार्यालयों के बीच पत्र व्यवहार करने हेतु पत्राचार के विभिन्न रूपों का प्रयोग किया जाता है परंतु किसी कार्यालय में बाहर से आए हुए किसी पत्रादि पर कार्रवाई करने से पूर्व एक या एक से अधिक अधिकारियों तथा सहायकों में वस्तुस्थिति को समझने व संक्षेप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इन सब कार्यों को करने, कराने के लिए फाइलों आदि पर जो लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाता है उसे टिप्पणी कहा जाता है। आकार या संरचना की दृष्टि से टिप्पणी तीन प्रकार की होती है:-

1. प्रशासनिक या नेमी टिप्पणी
2. स्वतः पूर्ण टिप्पणी

ये टिप्पणियाँ दो स्तर पर लिखी जाती हैं:-

अ. अधिकारी स्तर पर
ब. सहायक स्तर पर

3. आवती पर आधारित टिप्पणी यह टिप्पणी सहायक स्तर पर ही लिखी जाती है।

उपर्युक्त टिप्पणियों को लिखने के मार्गदर्शन सिद्धांत होते हैं जिनका पालन करना अनिवार्य है।

1. टिप्पणी सदैव मानक नोटशीट पर लिखी जाए।
2. टिप्पणी लेखन की शैली सीधी व सरल होनी चाहिए।
3. टिप्पणी संक्षिप्त एवं सुसंगत होनी चाहिए।
4. रोजमर्रा के नेमी मामलों को छोड़कर सामान्यतया आवती पर टिप्पणी न लिखी जाए।
5. विचाराधीन आवती / नई आवती के मुद्दों को फाइल पर ज्यों का त्यों नहीं लिखा जाए और न ही उसका सार दिया जाए।
6. टिप्पणी सदैव सुव्यवस्थित एवं व्यावहारिक हो।
7. आदेश / सुझाव देते समय अधिकारी को टिप्पणी के वास्तविक मुद्दों तक ही सीमित रहना चाहिए।
8. लंबी टिप्पणियों के अंत में एक पैरा होना चाहिए जिसमें संक्षेप में और स्पष्ट रूप में विचाराधीन मामले का सार हो।
9. नोटशीट के प्रत्येक पृष्ठ के चारों ओर लगभग एक इंच का हाशिया रखा जाना चाहिए।
10. टिप्पणी को स्पष्ट करने के लिए अनुच्छेदों में विभाजित कर संक्षिप्त शीर्षक भी दिए जा सकते हैं।
11. किसी मामले में स्पष्ट भूलों/गलत बयानी की ओर ध्यान आकर्षित करना आवश्यक हो या किसी मत की आलोचना करनी हो तो अभिमत शिष्ट एवं संतुलित भाषा में हो तथा किसी भी प्रकार के व्यक्तिगत दोषारोपण से बचा जाए।
12. असाधारण मामलों में संयुक्त सचिव/उनसे उच्चतर अधिकारी हरी या लाल स्याही का प्रयोग करते हैं जबकि अन्य श्रेणी के अधिकारी/कर्मचारी काली एवं नीली स्याही का प्रयोग करेंगे।
13. जब किसी विचाराधीन मामले में बहुत से महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए गए हों और प्रत्येक मुद्दे में विस्तृत जाँच की आवश्यकता हो तो संबंधित सहायक द्वारा प्रत्येक मुद्दे पर अलग-अलग टिप्पणी लिखी जाए।
14. किसी मामले में कारणवश अधिकारी द्वारा लिखित आदेश न दिया जा सकता हो और मौखिक आदेश द्वारा कार्रवाई की जा चुकी हो तो बाद में लिखित रूप में संबंधित अधिकारी से उसकी पुष्टि करा लेनी चाहिए।
15. तथ्यों के क्रमिक सार को तैयार कर एक अलग आवरण में अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत करें ताकि अधिकारी कम समय में मामले को समझ कर निर्णय ले सके।
16. यदि फाइल में तथ्यों का क्रमिक सार नहीं है या फाइल की पिछली टिप्पणी इस काम को पूरा न करती हो तो ऐसे मामलों में अधिकारी के समक्ष स्पष्ट एवं संक्षिप्त स्वतः पूर्ण सार प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
17. लंबी टिप्पणियों के अनुच्छेदों पर क्रम संख्या होनी चाहिए।

स्वतः पूर्ण और आवती पर आधारित टिप्पणियों को हम आगे के पाठों में देखेंगे। यहाँ नेमी टिप्पणियों की चर्चा करेंगे।

नेमी टिप्पणियाँ

जब कोई नई आवती कार्यालय में आती है तब उस पर शीघ्र कार्रवाई करने के उद्देश्य से अधिकारी हाशिए में अधीनस्थ अधिकारी / कर्मचारी को जो आदेश या दिशा निर्देश देता है उसे हाशिया टिप्पणी या नेमी टिप्पणी कहा जाता है।

यह टिप्पणी अधिकारी स्तर पर लिखी जाती है। इसके द्वारा अधिकारी अपने अधीनस्थ अधिकारी / कर्मचारी को कार्रवाई करने के संबंध में मार्गदर्शन देता है।

नेमी टिप्पणियाँ सामान्य, प्रशासनिक, वित्तीय आदि मामलों से संबंधित होती हैं। सामान्य टिप्पणियाँ अधिकांश तौर पर हाशिए में अधिकारियों द्वारा लिखी जाती हैं। इनका उद्देश्य मामले को निपटाने के संबंध में आदेश / निदेश देना होता है। हाशिए में लिखे जाने के कारण इन्हें हाशिया टिप्पणी भी कहा जाता है ।

आम प्रयोग के पदबंध

The offices will make necessary arrangements for the implementation of the scheme.	योजना के क्रियान्वयन के लिए कार्यालय आवश्यक प्रबंध करेंगे
According to the terms and conditions laid by the ministry from time to time.	मंत्रालय द्वारा समय-समय पर निर्धारित नियमों एवं शर्तों के अनुसार
Free accommodation will be provided to all faculty and staff of the academy.	अकादमी के सभी संकाय सदस्यों एवं स्टाफ को नि:शुल्क आवास सुविधा दी जाएगी
Liberalization of norms regarding subsidies to the farmers is completed.	किसानों की दी जाने वाली सब्सिडी में नियमों का उदारीकरण किया जाता है
A committee has been constituted for this purpose.	इस उद्देश्य के लिए एक समिति गठित की गई है
The claims regarding crop losses of farmer may be settled speedily.	किसानों की फसल की बर्बादी से संबंधित दावों का त्वरित निपटान किया जाए
House building advance may be sanctioned.	भवन निर्माण अग्रिम स्वीकृत किया जाए
Financial approval may be obtained.	वित्तीय अनुमोदन प्राप्त किया/लिए जाए
This amount may be deducted in 20 equal installments.	यह राशि 20 समान किस्तों में काटी जाए
Motorcycle advance of Rs. 30000 is sanctioned to shri ---------------	श्री ---------------- को रु. 30000/- मोटर साइकिल अग्रिम मंजूर किया जाता है
This amount may be deducted from the salary of shri ----------	यह राशि श्री ------------------ के वेतन से काटी जाए
Mr.----------- has applied for car advance.	श्री ------------------ ने कार अग्रिम के लिए आवेदन किया है
Administrative approval may be obtained.	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए
Bill has been scrutinized and found in order.	बिल की जांच की गई और उसे सही पाया गया
Discrepancy in bill may be reconciled.	बिल में विसंगति का समाधान किया जाए
Give details of all pending advances.	सभी लंबित अग्रीमो का विवरण प्रस्तुत करे
Medical claim may be reimbursed.	चिकित्सा बिल के प्रतिपूर्ति की जाए
There is no provision of this amount in the budget.	इस राशि का बजट में प्रवधान नहीं है
Emergency certificate has to be attached.	आपातकालीन चिकित्सा प्रमाण पत्र संलग्न करे
Put up Medical claim for payment immediately.	चिकित्सा दावे को तत्काल भुगतान हेतु प्रस्तुत करे
Shri --------------- is granted prior permission for treatment.	श्री ---------------------- को इलाज कराने की पूर्वानुमति दी जाती है
Medical facility is provided free of cost to the government employees.	सरकारी कर्मियों को चिकित्सा सुविधा नि:शुल्क दी जाती है
Medical claim may be passed for payment.	चिकित्सा दावे को भुगतान के लिए पारित किया जाए

आम प्रयोग के पदबंध

Medical certificate may be submitted.	चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया जाए
Medical leave of Shri ----------- is sanctioned.	श्री ------------------ की चिकित्सा छुट्टी मंजूर की जाती है
Shri ------------- has applied for LTC advance.	श्री ------------------ ने छुट्टी यात्रा रियायत अग्रिम के लिए आवेदन किया है
Tour programme of shri --------------is sanctioned.	श्री -------------------- का दौरा कार्यक्रम स्वीकृत किया जाता है
LTC advance of Rs. 10000/- sanctioned to Shri --------------.	श्री --------------------- रु. 10000/- की एलटीसी अग्रिम की राशि मंजूर की जाती है
Adjust the amount of advance.	अग्रिम राशि का समायोजन करें
LTC claim is put up for payment.	एलटीसी दावा भुगतान हेतु प्रस्तुत है
Sanctioned for payment	भुगतान के लिए स्वीकृत
Bill may be passed for payment	बिल को भुगतान के लिए पारित किया जाए
Sanction is hereby accorded.	स्वीकृति दी जाती है
Payment for 30 days leave encashment may be made.	30 दिन के अवकाश नकदीकरण का भुगतान किया जा सकता है

राष्ट्र हित

स्वस्थ शरीर के लिए हम रोज योग करें,
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।
दया करूणा के नाम घमंड नहीं,
दान दक्षिणा दो तो कोई दंड नहीं,

समय ने बदल दी है परिभाषा सुनो,
संकट को जो न समझे वो संबंध नही,
आपदा का सामना मिल सब लोग करें,
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।।

भूख ही है ये जो घर छुड़ाए,
भूख ही है जो सब विसराए।
भूख ने भुला दिए रिस्ते नाते,
भूख की भयावहता क्या बताएं।
भूख का समाधान न कोई संजोग करे।
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।।
अंधेरों में भटकते कल के उजाले,
उनका भी मुंह चिढ़ाते हैं निवाले,
दरबदर है मुफलिसी में इंसान यारों,
बंद मस्जिद है और बंद शिवाले।

परीक्षा हेतु संयम का उपयोग करें।
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।।
एक हाथ से दो दस से पाओगे,
आज नहीं दोगे तो कैसे पाओगे।

हमे कोई हमारा समझ सके जो
खो दोगे तो फिर कहां लाओगे।।
समाज कल्याण का अभी मनोयोग करें।।
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।

दिनेश देहाती
वरिष्ठ चार्जहैंड (मेकेनिकल)

आंशिक पर्यायवाची सूक्ष्म अर्थभेदी शब्द

'शब्द' वर्णों का वह सार्थक ध्वनि समूह है जिसको सुनकर हमारे हृदय में भावों या विचारों का बोध हो। शब्द में सार्थकता का गुण अनिवार्य है। सार्थकता की दृटि से भाषा की मौलिक अथवा लघुत्तम इकाई शब्द है । अतः सार्थक ध्वनि या ध्वनि समूह को शब्द कहा जाता है। शब्द की सार्थकता अर्थ का ज्ञान कराने में है। अर्थ प्रकट करने की दृष्टि से शब्द इतना विलक्षण है कि कभी वह अकेला ही अर्थ देता है तो कभी एक ही अर्थ के लिए अनेक शब्दों का ताँता लगा देता है। कभी पूरे वाक्यांश को ही अपने में समेट लेता है जो कभी थोड़े से विकार से ही भिन्न-भिन्न अर्थ प्रकट करता है ।

समानार्थी शब्दों में सूक्ष्म अंतर अथवा सूक्ष्म अर्थभेद रखने वाले शब्दों को 'अपूर्ण या आंशिक पर्यायवाची' या 'सूक्ष्म अर्थ भेदी' शब्द कहते हैं क्योंकि इस प्रकार के शब्दों में यद्यपि अर्थ की दृष्टि से पूर्ण समानता नहीं होती तथापि देखने-सुनने में ये एक दूसरे के समानार्थी होने का आभास-सा देते हैं, किंतु उनके अर्थ में काफी अंतर होता है। अर्थ की गहराई में जाने पर व्युत्पत्ति तथा प्रयोग संबंधी ऐसे सूक्ष्म अंतर इनमें देखने को मिल जाते हैं जिनसे उनका एक ही अर्थ में प्रयुक्त करना भ्रांतिकारक हो जाता है। ऐसे ही शब्दों के उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं-

१. अनिवार्य-आवश्यक

अनिवार्य – जो अत्यंत आवश्यक हो अर्थात् जिसे टाला या छोड़ा न जा सके।

आवश्यक – जरूरी, लेकिन इसमें अनिवार्य जैसी बाध्यता नहीं होती ।

2. अनभिज्ञ-अभिज्ञ-भिज्ञ-अज्ञ

अनभिज्ञ – अनजान, जिसे किसी विशिष्ट बात की जानकारी न हो ।

अभिज्ञ – जानकार जो अनेक विषयों की जानकारी रखता हो ।

भिज्ञ – जो किसी विशेष विषय की जानकारी रखता हो ।

अज्ञ – अज्ञानी ।

3. अनुभव-अनुभूति

अनुभव – व्यवहार, कर्म, अभ्यास आदि से प्राप्त ज्ञान । यह इंद्रियों द्वारा प्राप्त होता है।

अनुभूति – चिंतन और मनन से प्राप्त आंतरिक भाव-बोध। अनुभव के बाद अनुभूति होती है ।

4. अध्यक्ष-सभापति

अध्यक्ष – किसी संस्था की बैठक का प्रमुख ।

सभापति – किसी संस्था का स्थायी रूप से प्रमुख व्यक्ति ।

5. अगोचर-अज्ञेय-अज्ञात

अगोचर – जो इंद्रियों द्वारा न समझा जा सके, किंतु प्रयत्न से बुद्धि द्वारा जाना जा सकता है ।

अज्ञेय – जो किसी प्रकार न जाना जाए ।

अज्ञात – जिसके बारे में कोई जानकारी न हो ।

6. अनुसंधान-आविष्कार

अनुसंधान – ऐसी वस्तु की खोज जो विद्यमान तों है पर जिसका पता अभी तक किसी को नहीं है – हीरे, कोयले की खान का अनुसंधान ।

आविष्कार – किसी नई वस्तु की खोज-जैसे एक्सरे का आविष्कारं । ऐसी चीज का निर्माण जो पहले से 'विद्यमान न हो ।

7. अन्वेषण-खोज-अविष्कार

अन्वेषण – पुरानी वस्तुओं को नई दृष्टि से देखने, परखने का प्रयत्न । पहले से विद्यमान वस्तु की खोज।

खोज – गुमी हुई वस्तु की तलाश करना ।

8. अनुरोध निवेदन-आवेदन-प्रार्थना (अनुनय)

निवेदन – दूसरों के समक्ष नम्रता के साथ अपने विचारों अथवा माँगों को रखना, अर्थात् विनय ।

आवेदन – प्रार्थना करना ।

प्रार्थना – अपने से बड़ों के प्रति अथवा ईश्वर के प्रति प्रार्थना निवेदित की जाती है।

9. अपयश-कलंक

अपयश – सदा के लिए दोषी बन जाना । अपयश जीवन भर बना रहता है ।

कलंक – कुसंगत में पड़कर चरित्र पर दोष लगना । कालांतर में अच्छे कार्यों से कलंक धुल भी जाता है।

10. अभिमान-अहंकार-दर्प

अभिमान – सच्चा घमंड अथवा गर्व

अहंकार – झूठा घमंड, मन का झूठ गर्व । स्वयं को ही सब कुछ समझने की भावना ।

दर्प – घमंड, जैसे-राम ने रावण के दर्प को चूर-चूर कर दिया ।

11. अर्पण-प्रदान

अर्पण – अपने से बड़ों को कोई वस्तु भेंट करना ।

प्रदान – बड़ों की ओर से छोटों को दी जाने वाली वस्तु या भेंट ।

12. अस्त्र-शस्त्र

अस्त्र – फेंक कर मारा जाने वाला हथियार-बाण, बम आदि ।

शस्त्र – हाथ में पकड़कर मारा जाने वाला हथियार-गदा, तलवार, भाला, लाठी इत्यादि ।

13. अज्ञेय-अज्ञात

अज्ञेय – जिसके बारे में प्रयास करने पर भी न जाना सके ।

अज्ञात – जिसके बारे में कोई जानकारी न हो ।

14. अनुग्रह-अनुकंपा

अनुग्रह – किसी के मन की इच्छाओं की पूर्ति हेतु उसे कुछ प्रदान करना अथवा ग्रहण करना ।

अनुकंपा – हमदर्दी द्वारा किसी के कष्टों का निवारण ।

15. अध्ययन-अनुशीलन

अध्ययन – पढ़ने व पढ़ाने का सामान्य कार्य ।

अनुशीलन – किसी चीज को पढ़ने के बाद उसके बारे में मनन-चिंतन ।

16. अनुमान-प्राक्कलन

अनुमान – बौद्धिक तर्क द्वारा लिया गया निश्चय ।

प्राक्कलन – वह निर्णय जो गणना के सहारे लिया जाए ।

17. आधि-व्याधि

आधि – मानसिक कष्ट (चिंता, भय, असंतोष) ।

व्याधि – शारीरिक कष्ट अथवा रोग (बुखार, चोट, दर्द, घाव) ।

18. आकार-रूप

आकार – किसी वस्तु की बाह्य आकृति से संबंधित ।

रूप – अत्यव-संगठन, स्वरूप या सुंदरता से संबंधित ।

19. आशंका-डर-भय

आशंका – हानि की संभावना से भय का पूर्वानुमान ।

डर – किसी बाहरी वस्तु से हानि की संभावना ।

भय – 'मन की व्याकुलता जिससे अनिष्ट होने की संभावना हो ।

20. आत्मा-अंतःकरण

आत्मा – एक अतीन्द्रिय और अभौतिक तत्व जिसका कभी नाश नहीं होता ।

अंतःकरण – विशुद्ध मन की विवेकपूर्ण शक्ति ।

21. आदि-इत्यादि

आदि – साधारणतः एक या दो उदाहरणों के पश्चात् आदि का प्रयोग किया जाता है।

इत्यादि – सामान्यतः दो से अधिक उदाहरणों के बाद इस शब्द का प्रयोग होता है।

22. आल्हाद-उल्लास

आल्हाद – खुशी से फुला न समाना ।

उल्लास – उमंग एवं खुशी के भाव

23. आलोचना-समीक्षा

आलोचना – गुण एवं दोषों के बारे में टीका-टिप्पणी ।

समीक्षा – दोष एवं गुणों का वर्णन ।

24. आतंक-त्रास

आतंक – बलवान के अन्याय से उत्पन्न भय ।

त्रास – डर से उत्पन्न व्याकुलता ।

25. आगामी-भावी

आगामी – आनेवाला ।

भावी – होनेवाला ।

26. आचार-व्यवहार

आचार – चाल-चलन एवं चरित्र संबंधी कार्य ।

व्यवहार – वह बर्ताव जो दूसरों के साथ किया जाता है ।

27. आसक्ति-अनुराग

आसक्ति – सांसारिक वस्तुओं के प्रति आकर्षण।

अनुराग – निःस्वार्थ प्रेम ।

28. ईर्ष्या-स्पर्धा-द्वेष-डाह

ईर्ष्या – दूसरों की प्रगति अथवा उत्कर्ष देखकर जलने का भाव ।

स्पर्धा – दूसरों की प्रगति देखकर वैसा बनने की भावना अर्थात् होड़।

द्वेष – दूसरों से कारणवश जलना ।

डाह – जलन, कुंढ़न, खीज ।

29. उपहास-परिहास-व्यंग्य

उपहास – मज़ाक उड़ाना । अपमानित करने के उद्देश्य से किसी पर हँसना

परिहास – आपस में किया जाने वाला हँसी-मजाक।
व्यंग्य – कटु एवं गूढ़ उक्तियों आदि के द्वारा 'मर्माघात करके व्यक्ति को नीचा दिखाने या अपमान करने से संबंधित।

30. उपहार-भेंट
उपहार – वह भेंट जो बराबरी वालों अथवा छोटों को दी जाए।
भेंट – अपने से बड़ों को दिया जाने वाला उपहार।

31. उत्साह-साहस-उत्तेजना
उत्साह – साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है।
साहस – साधनों के अभाव में भी काम करने की तीव्र इच्छा (आनंद का प्राय : अभाव)।
उत्तेजना – किसी के द्वारा ज्यादती किए जाने पर उसके प्रति भाव।

32. उच्छृंखल-उद्दण्ड
उच्छृंखल – नियमबद्ध, न होना। जैसे --आजकल नवयुवक उच्छृंखल हो रहे हैं।
उद्दण्ड – वह, जो दंण्ड से भी नहीं डरता है।

33. उपादान-उपकरण
उपादन – वह सामान जिसके द्वारा कोई चीज तैयार की जाती है।
उपकरण – किसी कार्य के करने हेतु यंत्र आदि।

34. उन्नति-प्रगति
उन्नति – वर्तमान स्थिति से ऊपर उठना, विकास करना।
प्रगति – पिछड़ेपन की स्थिति से आगे बढ़ना।

35. उपज-उत्पत्ति-व्युत्पत्ति
उपज – खेत की पैदावार या बुद्धि की नई सूझ।
उत्पत्ति – जन्म या आरंभ
व्युत्पत्ति – किसी शब्द की उत्पत्ति का कार्य-कारण सहित पूरा लेखा जोखा।

36. कष्ट-दुःख-पीड़ा-क्लेश
कष्ट – मन और शरीर को सामान रूप से होने वाली असुविधा।
दुःख – अप्रिय वस्तु आदि को देख, सुन या अनुभव करने से उत्पन्न होने वाला मानसिक कष्ट।
पीड़ा – किसी रोग या चोट आदि के कारण शारीरिक कष्ट।
क्लेश – मन के अप्रिय भावों से संबंधित मानसिक दुःख।

37. कन्या-किशोरी-बाला-युवती-प्रौढ़
कन्या – 10 वर्ष की कुमारी कन्या।
किशोरी – सामान्यत: 10 से 15 वर्ष तक की लड़की
बाला – 16 वर्ष की लड़की।
युवती – 16 से अधिक वर्ष की लड़की लेकिन 30 से कम वर्ष की।
प्रौढ़ – 30 वर्ष के बाद प्रौढ़ावस्था प्रारंभ हो जाती है।

38. काल-युग
काल – निर्धारित समय, यथा-जीवन काल, वर्तमान काल, भूतकाल।
युग – 12 वर्ष की समयावधि। व्यापक अर्थ में प्रयुक्त जिसमें अनेक कालों का समावेश हो जाता है, यथा आधुनिक युग, वैज्ञानिक युग, छायावादी युग।

39. कर्तव्य-कार्य
कर्तव्य – धार्मिकः या नैतिक बंधन से युक्त कार्य, जैसे-- माता-पिता की सेवा, राष्ट्र की सेवा।
कार्य – साधारण काम कार्य कहलाता है।

40. खेद-दुःख-ग्लानी-घृणा
खेद – वह भाव जिसकी अनुभूति किसी काम के न कर सकने पर होती है।
दुःख – दुर्घटना एवं अन्य प्रकार की हानि द्वारा उत्पन्न मन का भाव।
ग्लानी – अपने द्वारा किए गए बुरे काम पर होने वाला पश्चाताप।
घृणा – नफरत, किसी व्यक्ति के अनुचित कार्य के प्रति मन में उत्पन्न भाव अथवा घिन।

41. तट-पुलिन-तीर-किनारा
तट – नदी, तालाब या सागर के निकट की जमीन का हिस्सा।
पुलिन – नदी आदि के तीर की भीगी हुई जमीन।
तीर – नदी आदि के जल को स्पर्श करने वाली जमीन।..
किनारा – जलाशयों आदि की पानी से बाहर निकली हुई जमीन का ऊपरी भाग।

42. नहीं-मत-न
नहीं – किसी वस्तु या विचार का पूर्ण निषेध, जैसे-- मैं नहीं जाऊँगा।
मत – विधि क्रिया के निषेधार्थ, जैसे-झूठ. मत बोलो।
न – एक निषेधार्थ अव्यय, जैसे--न आता है, न जाता है, कहीं ऐसा न हो. कि एक दिन वह धोखा दे।

43. निद्रा-तंद्रा
निद्रा – सो जाना।
तंद्रा – नींद की अर्ध अवस्था।

44. पुरस्कार-पारितोषिक
पुरस्कार – किसी श्रेष्ठ कार्य करने पर दिया जाने वाला ईनाम।
पारितोषिक – विजयी होने पर उत्साह बढ़ाने के लिए दी जाने वाली वस्तु।

अशुद्ध एवं शुद्ध वाक्य

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
उसे लगभग शत प्रतिशत अंक मिले।	उसे शत प्रतिशत अंक मिले।
मैं सायंकाल के समय घूमने जाता हूँ।	मैं सायंकाल घूमने जाता हूँ।
सारी दुनिया भर में यह बात फैल गई।	दुनिया भर में यह बात फैल गई।
वह विलाप करके रोने लगी।	वह विलाप करने लगी।
विंध्याचल पर्वत बहुत प्राचीन है।	विंध्याचल बहुत प्राचीन है।
किसी और दूसरे से परामर्श लीजिए।	किसी और से परामर्श लीजिए।
वह बहुत सज्जन पुरुष है।	वह बहुत सज्जन है।
वह सबसे सुंदरतम कमीज है।	वह सबसे सुंदर कमीज है।
शायद वह जरूर जाएगा।	वह जरूर जाएगा।
देश की वर्तमान मौजूदा हालत ठीक नहीं है।	देश की वर्तमान हालत ठीक नहीं है।
सप्रमाण सहित स्पष्ट कीजिए।	सप्रमाण स्पष्ट कीजिए।
ठंडा बर्फ लाओ।	बर्फ लाओ।
दासता युक्त गुलामी का का जीवन ठीक नहीं।	दासता युक्त जीवन ठीक नहीं।
कई वर्षों तक भारत के गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।	कई वर्षों तक भारत के पैरों में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।
तरुण नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध होना चाहिए।	नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध होना चाहिए।
वह पानी से पौधों को सींचता है।	वह पौधों को सींचता है।
उसने हाथी पर काठी बाँध दी।	उसने हाथी पर हौदा रख दिया।
सेना ने विख्यात आतंकवादी मार गिराया।	सेना ने कुख्यात आतंकवादी मार गिराया।
इस सौभाग्यवती कन्या को आशीर्वाद दें।	इस सौभाग्याकांक्षिणी कन्या को आशीर्वाद दें।
गोलियों की बाढ़ के समक्ष कोई टिक न सका	गोलियों की बौछार के समक्ष कोई टिक न सका।
तुलसी ने मानस की रचना लिखी है।	तुलसी ने मानस की रचना की है।
वह कड़ाही–बुनाई जानती है।	वह कढ़ाई–बुनाई जानती है।
शास्त्रीजी की मृत्यु से हमें बड़ा खेद हुआ।	शास्त्री जी के निधन से हमें बड़ा दुःख हुआ।
हमें चरखा कातना चाहिए।	हमें चरखा चलाना चाहिए।
आगामी घटनाओं को कौन जान सकता है।	भावी घटनाओं को कौन जान सकता है।

अशुध्द शुध्द वाक्य

तलवार एक उपयोगी अस्त्र है।	तलवार एक उपयोगी शस्त्र है।
बेरोजगारी की पीड़ा तलवार की नोक पर चलने के समान कष्टदायी है।	बेरोजगारी की पीड़ा तलवार की धार पर चलने के समान कष्टदायी है।
अपराधी को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई।	अपराधी को मृत्युदंड दिया गया।
अंधेरी रात में कुत्ते जोर से चिल्ला रहे थे।	अंधेरी रात में कुत्ते जोर से भोंक रहे थे।
देश भर में दीपावली का उत्सव मनाया गया।	देश भर में दीपावली का त्योहार मनाया गया।
कालचक्र के पहिए से बचना संभव नहीं है।	कालचक्र से बचना संभव नहीं है।
लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम विलाप करके रोने लगे।	लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम विलाप करने लगे।
मैंने कल जयपुर जाना है।	मुझे कल जयपुर जाना है।
कोई डॉक्टर को बुला दो।	किसी डॉक्टर को बुला दो।
दूध में कौन गिर गया।	दूध में क्या गिर गया।
दरवाजे पर क्या खड़ा है?	दरवाजे पर कौन खड़ा है?
जो भी हो, लौट आए।	जो भी गया हो, लौट आए।
मैं आपकी प्रतीक्षा ही कर रहा था और तुम आ गए।	मैं आपकी प्रतीक्षा ही कर रहा था और आप आ गए।
हमको सबको फिल्म देखने जाना है।	हम सबको फिल्म देखने जाना है।
तेरा उत्तर मुझसे अच्छा है।	आपका उत्तर मेरे उत्तर से अच्छा है।
मेरे को एक पेंसिल चाहिए।	मुझे एक पेंसिल चाहिए।
वह रेडियो पर बोल रहे थे।	वे रेडियो पर बोल रहे थे।
उसने काम पूरा कर चुका है।	वह काम पूरा कर चुका है।
मैं रमेश को नहीं मारा हूँ।	मैंने रमेश को नहीं मारा है।
सीता और सीता का पुत्र कार्य में व्यस्त हैं।	सीता और उसका पुत्र कार्य में व्यस्त हैं।
मैं तेरे को कुछ कहना चाहता हूँ।	मैं तुझे कुछ कहना चाहता हूँ।
उसने समय पर पहुँचना है।	उसे समय पर पहुँचाना है।
वह जानते हैं कि ऐसा हो सकता है।	वे जानते हैं कि ऐसा हो सकता है।
मैं और मेरे मित्रों को क्रिकेट खेलने का शौक है।	मुझे और मेरे मित्रों को क्रिकेट खेलने का शौक है।
मजदूरों में रोष था इसलिए उसने घेराव किया।	मजदूरों में रोष था इसलिए उन्होंने घेराव किया।

ई-सरल हिंदी वाक्यांश

क्र सं.	अंग्रेजी में शब्द	हिंदी में अर्थ	अंग्रेजी वाक्य में प्रयोग	हिंदी वाक्य में प्रयोग
1.	Steel Sector	इस्पात क्षेत्र	Make in India initiative in steel sector	इस्पात क्षेत्र में की जाने वाली 'मेक इन इंडिया' पहल
2.	Crude Steel	क्रूड इस्पात	India is currently the world's 2rd largest producer of crude steel	वर्तमान में भारत विश्व भर में क्रूड इस्पात का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है
3.	Corporate social responsibility	निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व	Corporate social responsibility by CPSEs under Ministry of Steel	इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन सीपीएसई के निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व
4.	Iron ore	लौह अयस्क	Production of iron ore has been Increased	लौह अयस्क का उत्पादन बढ़ गया है
5.	Research and development	अनुसंधान एवं विकास	Government steel development fund is used to encourage the research and development activities in the private sector	निजी इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार की इस्पात विकास निधि का प्रयोग किया जाता है।
6.	Supply of Steel	इस्पात की आपूर्ति	Supply of Steel to Railways has been made	रेलवे को इस्पात की आपूर्ति की जा चुकी है।
7.	Steel plants	इस्पात संयंत्र	There are enormous Employment opportunities in steel plants	इस्पात संयंत्रों में रोजगार के पर्याप्त अवसर हैं
8.	Steel industry	इस्पात उद्योग	Financial assistance for steel industry	इस्पात उद्योग के लिए वित्तीय सहायता
9.	SAIL	सेल	Steel Authority of India limited	स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया (भारतीय इस्पात प्रधिकरण लि.)
10.	CPSE-Central Public Sector Enterprises	केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम	There are many Central Public Sector Enterprises under the Ministry of Steel	इस्पात मंत्रालय के अधीन कई केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम हैं
11.	DPE-Department public Enterprises	सार्वजनिक उद्यम विभाग	The Department public Enterprises assists Central Public Sector Enterprises	सार्वजनिक उद्यम विभाग केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों की सहायता के लिए है।
12.	CSR-Cell	सीएसआर सेल	Each company is reported to have constituted a dedicated CSR-cell	प्रत्येक कंपनी ने एक समर्पित सीएसआर सेल गठित किया है
13.	Unique Inbuilt Sunset Clause	यूनिक इनबिल्ट सनसेट क्लॉज	CSR program has a Unique Inbuilt Sunset Clause providing review and policy after three years	सीएसआर कार्यक्रम में एक यूनिक इनबिल्ट सनसेट क्लॉज भी है जिसमें हर तीन वर्ष के बाद पॉलिसी की समीक्षा की जाती है।
14.	MSTC Limited	एमएसटीसी लिमिटेड	Metal Scrap Trade Corporation Limited	मेटल स्क्रैप ट्रेड कारपोरेशन लिमिटेड

ई-सरल हिंदी वाक्यांश

क्र सं.	अंग्रेजी में शब्द	हिंदी में अर्थ	अंग्रेजी वाक्य में प्रयोग	हिंदी वाक्य में प्रयोग
15.	NMDC Limited	एनएमडीसी लिमिटेड	National Mineral Corporation Limited	राष्ट्रीय खनिज विकास निगम लिमिटेड
16.	FSNL	एफएसएनएल	Ferro Scrap Nigam Limited	फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड
17.	Mecon Limited	मेकॉन लिमिटेड	Metallurgical & Engineering Consultants Limited	मेटल एंड इंजीनियरिंग कंसल्टेंसी लिमिटेड
18.	JPC	जेपीसी	Joint Plant Committee Collects data of Iron and steel sector	संयुक्त संयंत्र समिति लौह एवं इस्पात क्षेत्र के आंकडे एकत्र करती है।
19.	Scrap	स्क्रैप	Scrap for steel production	इस्पात उत्पादन के लिए स्क्रैप
20.	Pollution control device	प्रदूषण नियंत्रण उपकरण	Use of Pollution control device in Steel Plants	इस्पात संयंत्रों में प्रदूषण नियंत्रण उपकरण का उपयोग
21.	Modernization and Expansion	आधुनिकीकरण और विस्तार	Modernization and Expansion of steel plants	इस्पात संयंत्रो का आधुनिकीकरण और विस्तार
22.	Domestic steel	घरेलू इस्पात	Use of domestic steel in Government's Infrastructure projects.	सरकार की अवसंरचनात्मक परियोजनाओं में घरेलू इस्पात का उपयोग
23.	Crude Steel Production	क्रूड इस्पात का उत्पादन	Crude Steel Production has increased in this year	इस वर्ष क्रूड इस्पात का उत्पादन बढ़ गया है
24.	Ministry of steel	इस्पात मंत्रालय	Functions of Ministry of steel	इस्पात मंत्रालय के कार्य
25.	Steel Production Target	इस्पात उत्पादन लक्ष्य	Steel Production Target is to be achieved	इस्पात उत्पादन लक्ष्य प्राप्त किया जाना है।
26.	Performance of steel sector	इस्पात क्षेत्र का कार्य-निष्पादन	Performance of steel sector is good	इस्पात क्षेत्र का कार्य-निष्पादन अच्छा है।
27.	Captive Mines	कैप्टिव खान	Captive mines are under steel sector	कैप्टिव खान इस्पात क्षेत्र के अधीन है।
28.	Quality control	गुणवता नियंत्रण	Ministry of Steel has implemented Quality control order on various steel and steel products	इस्पात मंत्रालय ने विभिन्न इस्पात एवं इस्पात उत्पादों पर गुणवता नियंत्रण आदेश लागू किया है।
29.	RINL	आरआईएनएल	Rashtriya Ispat Nigam Limited	राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
30.	Sponge Steel	स्पंज इस्पात	Sponge Steel is used in steel industry	स्पंज इस्पात का उपयोग इस्पात उद्योग में किया जाता है।

अनुवाद का महत्व

अनुवाद मानव सभ्यता की शुरुआत से ही भाषा और संवाद के माध्यम से समाजों और संस्कृतियों के बीच सेतु का काम करता आ रहा है। यह प्रक्रिया सिर्फ भाषाओं के बीच शब्दों के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से विचारों, भावनाओं, और संस्कृतियों का भी प्रसार होता है। अनुवाद के बिना विभिन्न भाषाएं बोलने वाले लोगों के बीच संवाद असंभव होता। आज के वैश्वीकृत युग में, जब विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच आपसी संवाद की आवश्यकता बढ़ी है, तब अनुवाद का महत्व और भी बढ़ गया है।

अनुवाद का मूल अर्थ होता है, एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में परिवर्तित करना। इसका उद्देश्य यह होता है कि मूल पाठ का सही-सही अर्थ, भावना और संदर्भ दूसरी भाषा में प्रस्तुत किया जा सके। अनुवाद सिर्फ शब्दों का बदलाव नहीं होता, बल्कि इसमें उन भावनाओं, भावों, और सन्दर्भों का भी सही-सही रूपांतरण करना होता है, जो मूल भाषा में निहित होते हैं।

अनुवाद के प्रकार : अनुवाद के कई प्रकार होते हैं, जिनमें प्रमुख रूप से साहित्यिक, तकनीकी, विधिक (कानूनी), और व्यापारिक अनुवाद शामिल हैं। इन सभी प्रकारों में अनुवादक को अलग-अलग चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि हर क्षेत्र की अपनी अलग भाषा, शैली और संदर्भ होते हैं।

साहित्यिक अनुवाद : इसमें कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों आदि का अनुवाद होता है। यह सबसे चुनौतीपूर्ण अनुवादों में से एक होता है क्योंकि इसमें केवल भाषा ही नहीं, बल्कि साहित्यिक शैली, भावनाओं और लेखन की गहराई को भी बनाए रखना होता है।

तकनीकी अनुवाद : इसमें वैज्ञानिक, तकनीकी और चिकित्सा से जुड़े दस्तावेजों का अनुवाद होता है। इसमें सटीकता और विशेष शब्दावली का ध्यान रखना बेहद आवश्यक होता है।

विधिक अनुवाद: इसमें कानून से संबंधित दस्तावेजों का अनुवाद शामिल होता है, जैसे संविदाएं, नीतियां, और कानूनी अभिलेख। यह अनुवादक से अत्यधिक सावधानी और कानूनी शब्दावली की गहन समझ की मांग करता है।

व्यावसायिक अनुवाद:
इसमें व्यापार, विपणन, और वित्त से जुड़े दस्तावेजों का अनुवाद किया जाता है। इस अनुवाद में व्यवसायिक शब्दावली, ग्राहक की भाषा और बाज़ार के संदर्भों को समझना आवश्यक होता है।

अनुवाद वैश्विक संवाद का साधन:
अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के लोग आपस में संवाद कर सकते हैं। वैश्वीकरण के इस युग में, जब दुनिया एक वैश्विक गाँव बन चुकी है, अनुवाद का महत्व और भी बढ़ गया है। व्यापारिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और राजनैतिक स्तर पर विभिन्न देशों के बीच संवाद अनुवाद के बिना संभव नहीं है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान:
अनुवाद केवल भाषाओं का आदान-प्रदान नहीं करता, बल्कि इसके माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के लोग एक-दूसरे के साहित्य, कला, संगीत, और परंपराओं को समझ सकते हैं। अनुवाद के बिना कोई भी संस्कृति अपनी सीमाओं से बाहर नहीं जा सकती।

एक समय में एक काम करो और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमें डाल दो और बाकि सब कुछ भूल जाओ।

ज्ञान का प्रसार :
वैज्ञानिक, तकनीकी और शैक्षिक क्षेत्रों में अनुवाद का अत्यधिक महत्व है। विभिन्न भाषाओं में लिखे गए शोध-पत्र, किताबें और वैज्ञानिक खोजें, अनुवाद के माध्यम से ही दूसरी भाषाओं के लोगों तक पहुँच पाती हैं। इससे ज्ञान का वैश्विक प्रसार होता है और नवाचार को बढ़ावा मिलता है।

व्यापार और वाणिज्य में भूमिका :
अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अनुवाद की अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विभिन्न देशों के बीच व्यापारिक समझौतों, संविदाओं, विपणन सामग्री, और वित्तीय रिपोर्टों का अनुवाद करने से व्यापारिक संवाद सहज हो पाता है। अनुवाद व्यापारिक संचार को सुचारु बनाता है और गलतफहमियों को रोकने में मदद करता है।

शिक्षा और अनुसंधान में सहायता :
शैक्षिक और अनुसंधान क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता होती है। दुनिया भर के विश्वविद्यालय और शोध संस्थान अपने ज्ञान और अनुभवों का आदान-प्रदान अनुवाद के माध्यम से करते हैं। इससे छात्रों और शोधकर्ताओं को विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध सामग्री तक पहुँचने में मदद मिलती है।

अनुवाद और भाषा की बारीकियाँ:
हर भाषा की अपनी बारीकियाँ होती हैं। शब्दों के अर्थ, मुहावरे, कहावतें, और वाक्य संरचनाएँ एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवादित करते समय अक्सर चुनौतीपूर्ण हो जाती हैं। कई बार शब्दों का सही-सही अनुवाद संभव नहीं हो पाता और उनका अर्थ बदल सकता है।

संस्कृति का संदर्भ :
अनुवाद में संस्कृति का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक होता है। एक भाषा के शब्दों का दूसरी भाषा में सीधा अनुवाद करने से मूल संदर्भ और भावनाएँ खो सकती हैं। इसलिए, अनुवादक को भाषा के साथ-साथ उस संस्कृति की भी गहरी समझ होनी चाहिए जिससे वह अनुवाद कर रहा है।

तकनीकी शब्दावली :
विशेषकर तकनीकी और विधिक अनुवादों में सही शब्दावली का प्रयोग करना अनिवार्य होता है। गलत अनुवाद के कारण गलतफहमी पैदा हो सकती है और इसका असर गंभीर हो सकता है, जैसे कानूनी दस्तावेजों में गलत अनुवाद से कानूनी विवाद खड़ा हो सकता है।

साहित्यिक भावनाएँ और शैली :
साहित्यिक अनुवाद में भावनाओं, भावों, और लेखन की शैली का सही-सही अनुवाद करना सबसे बड़ी चुनौती होती है। हर भाषा की अपनी अलग साहित्यिक शैली होती है, जिसे दूसरी भाषा में बनाए रखना कठिन होता है।

अनुवादक के गुण :
एक सफल अनुवादक के पास केवल भाषाओं की जानकारी होना पर्याप्त नहीं है। उसे कुछ विशेष गुणों से भी संपन्न होना चाहिए:

दोनों भाषाओं की गहन जानकारी :
अनुवादक को उस भाषा में दक्ष होना चाहिए जिससे वह अनुवाद कर रहा है, और साथ ही उस भाषा में भी जिसमें वह अनुवाद कर रहा है।

सांस्कृतिक समझ :
अनुवादक को दोनों भाषाओं से संबंधित संस्कृतियों की गहरी समझ होनी चाहिए ताकि वह सही संदर्भ में अनुवाद कर सके।

अनुसंधान और ज्ञान :
अनुवादक को जिस विषय का अनुवाद करना है, उसकी गहन जानकारी होनी चाहिए। उसे तकनीकी, साहित्यिक, विधिक या किसी भी विशेष क्षेत्र से संबंधित शब्दावली और संदर्भों की समझ होनी चाहिए।

धैर्य और सटीकता :
अनुवाद एक धैर्यपूर्ण कार्य है, जिसमें सटीकता का अत्यधिक महत्व है। अनुवादक को हर शब्द, वाक्य और संदर्भ पर ध्यान देना चाहिए ताकि अनुवाद सटीक और सही हो।

अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव :
अनुवाद का समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव होता है। इसके माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के बीच संपर्क होता है, जिससे आपसी समझ और सामंजस्य बढ़ता है।

अनिल घरडे
सहा. हिंदी अनुवादक

अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

मॉयल लिमिटेड द्वारा दिनांक 06 मार्च 2025 को बालाघाट खान में राजभाषा अधिकारियों की अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया संगोष्ठी में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बालाघाट (म.प्र.) के सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारी तथा मॉयल लिमिटेड की महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश में स्थित सभी खानों के हिन्दी अधिकारियों एवं हिन्दी टंककों ने प्रतिभागिता की। **संगोष्ठी का प्रारंभ मंचासीन सदस्यों द्वारा दीप प्रज्वलन करके किया गया।**

कार्यक्रम के दौरान श्रीमती सुदर्शन मैंदीरत्ता, संयुक्त सचिव, इस्पात मंत्रालय ने कार्यक्रम में ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर उपस्थित सभी लोगो का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री आनन्द भोई, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थित हुए। साथ ही राजभाषा विभाग, इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री चंद्रेश मीना एवं वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्री सौरभ आर्य भी उपस्थित रहे, श्री आर. यू. सिंह, अभिकर्ता, समूह-।, मॉयल लिमिटेड, बालाघाट खान द्वारा स्वागत भाषण दिया गया । अपने संबोधन में आनन्द भोई, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने कहा कि ऐसी संगोष्ठियों से राजभाषा प्रयोग को बल मिलेगा एवं कार्यान्वयन के लिए नए विचारों का उदगम होगा मॉयल भारती पत्रिका के १२वें अंक का विमोचन, इस्पात मंत्रालय से उपस्थित संयुक्त निदेशक (राजभाषा), वरिष्ठ अधिकारियों एवं समूह अभिकर्ता, खान प्रबंधक एवं राजभाषा अधिकारी के करकमलों से किया गया। निदेशक

(मानव संसाधन) ने ऑनलाइन जुड़कर अपने सम्बोधन मे सभी को नियमित रूप से गृह मंत्रालय द्वारा जारी सभी दिशा निर्देशों का पूर्णतः पालन करने को कहा। अपने सम्बोधन में सभी के साथ साझा किया कि मॉयल लिमिटेड में नियमित रूप से राजभाषा विभाग द्वारा सभी गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।

संगोष्ठी में दो सत्र का आयोजन किया गया जिसमें वक्ता के रूप में श्री सौरभ आर्य, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, राजभाषा विभाग, इस्पात मंत्रालय एवं श्री अनिल त्रिपाठी, उप निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग, नागपुर द्वारा व्याख्यान दिया गया ।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में श्री सौरभ आर्य,वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,राजभाषा विभाग, इस्पात मंत्रालय द्वारा सरकारी कामकाज में ई–टूल की भूमिका पर व्याख्यान दिया गया। सरकारी कामकाज में ई टूल के माध्यम से दैनिक कार्य को आसानी से कैसे किया जाए,इस बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। हिन्दी टंकण से लेकर अनुवाद तक सभी कार्य ई–टूल के माध्यम से आसानी से किए जा सकते है। ई–टूल, कार्यालयीन कार्य में बहुत उपयोगी साबित हो रहा है एवं सभी प्रतिभागियों को विस्तार पूर्वक कंठस्थ टूल का उपयोग प्रायोगिक रूप से करके दिखाया गया।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में श्री अनिल त्रिपाठी, उप निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग, नागपुर द्वारा राजभाषा में हमारी भूमिका विषय पर व्याख्यान दिया गया। राजभाषा हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा उपयोग हेतु हमारी क्या भूमिका होनी चाहिए इस बारे मे वक्ता द्वारा विस्तार से जानकारी प्रदान की गई । राजभाषा हिन्दी के विस्तार और उतरोत्तर वृद्धि के लिए हमे क्या करना चाहिए और हमारी क्या भूमिका होनी चाहिए साथ ही दैनिक कार्य को कैसे आसानी से किया जा सकता है, इस संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई ।

राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलन सम्पन्न

साहित्यिक संस्था साहित्य संगम तिरोड़ी द्वारा मॉयल लिमिटेड के सहयोग से राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलन का आयोजन मॉयल मंगल भवन तिरोड़ी में 26 अप्रैल को किया गया। प्रथम चरण में नवोदित कवियों के प्रोत्साहन के लिए दस्तक युवा कवि सम्मेलन दोपहर 1 बजे से 3 बजे तक हुआ जिसमें क्षेत्र के युवा कवियों ने शानदार काव्य पाठ किया। सभी सहभागी कवियों को प्रकाशित साहित्य एवं भारतीय संविधान की एक एक प्रति भेंट की गई। द्वितीय चरण – साहित्यिक विचार गोष्ठी अपराह्न 4 बजे से प्रारंभ हुई। राष्ट्र भाषा हिंदी के विकास में लोक भाषाओं का योगदान विषय पर दिनेश देहाती की अध्यक्षता में दीपक रत्न पारखी, विकास सनोडिया, संजय खोबरागड़े, मनोज दुबे एवं राजवीर सिंह सिकरवार ने अपने विचार रखे। सभी सहभागी वक्ताओं को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। पुस्तक प्रदर्शनी का शुभारंभ खान प्रबंधक मनीष ढोके द्वारा सभी साहित्यकारों की उपस्थिति किया गया।

मॉयल लिमिटेड के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम का सम्मान समारोह रात्रि 8 बजे शुरू हुआ। इस समारोह में मनीष ढोके खान प्रबंधक तिरोडी खान कार्यक्रम अध्यक्ष, कैलाश जैन बालाघाट मुख्य अतिथि, फिरोज खान(सरपंच प्रतिनिधि), श्री रितेश माने मुख्य प्रबंधक कार्मिक, श्री मनीष सूर्यवंशी, श्री अविनाश देशमुख विशेष अतिथि एवं संस्था अध्यक्ष दिनेश देहाती की उपस्थिति में प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किए गए। जिसने साहित्यकार, पत्रकार, समाजसेवी, युवा प्रतिभाओं एवं वरिष्ठ नागरिकों को विभिन्न सम्मान एवं उपाधियों से सम्मानित किया गया।

चतुर्थ चरण में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन अपने शानदार ऊंचाई तक गया। हास्य व्यंग गीत ग़ज़ल के भरपूर इस कवि सम्मेलन का मंच संचालन दिनेश देहाती ने किया। डॉ प्रतिभा पटेल जबलपुर द्वारा प्रस्तुत वाणी वंदना के पश्चात् कुशल जैन बालाघाट, राजेन्द्र मेश्राम नील चांगोटोला, साजिद खैरों मेंहदीवाड़ा, मनोज दुबे कांटाफोड़, सुश्री रक्षा रूही दिल्ली (नेत्रहीन), सुश्री अनामिका चौकसे अनु नरसिंहपुर, सतीश लाखोटिया नागपुर, डॉ प्रतिभा पटेल जबलपुर, रमेश विश्वहार रायपुर, राजवीर सिंह सिकरवार सबलगढ़ मुरैना ने शानदार काव्य पाठ किया। रात्रि **2** बजे तक चले इस महोत्सव में श्रोताओं ने भरपूर आनंद लिया।

खान स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं कार्यक्रम

दिनांक 15.04.2025 को कान्द्री खान में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 27.04.2025 को बालाघाट खान में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।

दिनांक 30.04.2025 को डोंगरी बुजुर्ग खान में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक 24.05.2025 को उकवा खान में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।

हिंदी मासिक प्रतियोगिता

राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के लिए मॉयल लिमिटेड, मुख्यालय नागपुर में हिंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस तारतम्य में दिसम्बर 2024 से जून 2025 के मध्य विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 27.02.2025 को हिंदी एकांक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 24.03.2025 को स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 29.04.2025 को स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 21.05.2025 को राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

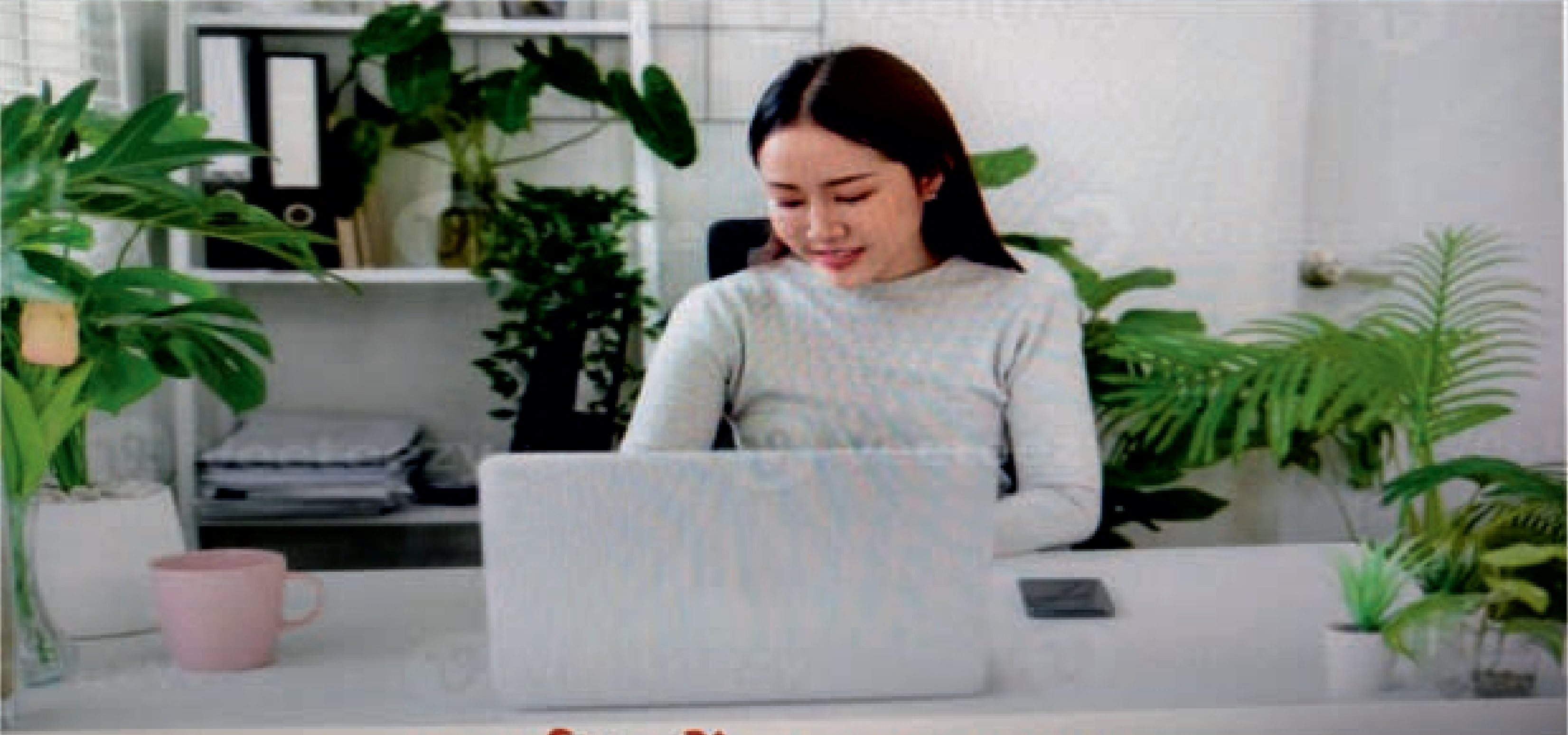

कार्यस्थलों का वातावरण

किसी भी देश की प्रगति में उसके विभिन्न सरकारी व निजी कार्य संस्थानों का विशिष्ट योगदान होता है। परन्तु इसके लिए कार्यालयों/संस्थानों के कार्यस्थलों पर सकारात्मक वातावरण का होना एक बहुत ही महत्वपूर्ण आवश्यकता है। कार्यस्थलो के वातावरण का सम्बन्ध काफी हद तक संस्थान के कर्मचारियों के अपने कार्य के प्रति, संस्था के प्रति तथा अपने सहकार्मियों के प्रति दृष्टिकोण व विभिन्न विभागों के बीच आपसी सहयोग व तालमेल की भावना इत्यादि पर निर्भर करता है। इस लेख में कुछ ऐसे ही पहलुओं पर चर्चा की गई है तथा कुछ ऐसे सुझाव देने का प्रयास किया गया है जो कार्यस्थलों के वातावरण को बेहतर बनाने में सहायक हों।

जब हम कार्य को पूजा की तरह मानकर करते हैं तो हम उसे एकाग्रतापूर्वक, निष्ठापूर्वक प्राथमिकता देकर, अपना सर्वस्व झोंककर, पूरे हृदय के साथ करते हैं। इस तरह कार्य करने पर हमें फल ही अपेक्षा नहीं रहती तथा सत्य यह है कि इस तरह कार्य करने पर फल स्वतः ही बहुत सुखद प्राप्त होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि

उपरोक्त तरह से किया गया कार्य कर्मयोग कहलाता है जिसके द्वारा परमात्मा की अनुभूति भी की जा सकती है अर्थात् इस तरह का कर्म, पूजा के ही तुल्य है। अपने कर्तव्यों को अच्छी तरह से निभाना ही सच्ची ईश्वर भक्ति है। रोजगार में रहते हुए कार्यस्थलों पर उपरोक्त प्रकार का कर्म इसलिए और भी जरूरी है, क्योंकि हम यह जानते हैं कि उसी के द्वारा हमें अपनी रोजी-रोटी तथा विभिन्न प्रकार की अन्य सुख सुविधाएं प्राप्त होती है। कर्म के विषय मे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का निम्नलिखित कथन बहुत ही उपयोगी लगता है।

अपने कर्म को सलाम करो, दुनिया सलाम करेगी। यदि कर्म को दूषित रखोगे तो हर किसी को सलाम करना पड़ेगा।

मेरे विचार मे कर्म ही पूजा है किसी भी संस्थान की प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण नीति वाक्य हो सकता है, 'सूझ-बूझ कर बोलना'। कार्यस्थलों पर व्याप्त विभिन्न बुराइयों में से एक अन्य बहुत ही सामान्य बुराई होती है कि कुछ लोग बिना वजह की फालतू बातें करते रहते हैं। जिससे नकारात्मक वातावरण पैदा होता है तथा कार्य पर से लोगों का ध्यान बँटता है।

इस सम्बन्ध में महात्मा बुद्ध द्वारा बताया गया है कि कुछ भी बोलने से पहले किया जाने वाला परिक्षण काफी उपयोगी होता है। इसके अनुसार हमें कोई भी बात बोलने से पहले अपनी कही जाने वाली बात को तीन प्रकार से परख लेना चाहिये।

पहली, यह कि क्या वह बात सत्य है, दूसरी, यह कि क्या वह बात सुहावनी है, तीसरी, यह कि क्या वह बात उपयोगी है। हमें ऐसा कोई भी कथन नहीं बोलना चाहिए, जो कि उपरोक्त परिक्षण मे पास नहीं होता। इसलिए कर्म और वचन का विचारपूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

❊ **पूजा वर्मा**
राजभाषा अधिकारी

टूटते सपनों की आवाज़

सुधा अपनी आँखों में बड़े-बड़े सपने लेकर गाँव से शहर आई थी। उसकी माँ ने हमेशा उसे सिखाया था कि हिम्मत और मेहनत से हर सपना सच हो सकता है। एक छोटे से गाँव में पली-बढ़ी सुधा ने कभी बड़े शहर की चकाचौंध नहीं देखी थी। लेकिन उसने सुना था कि शहरों में सपने पंख पाकर उड़ते हैं।

सुधा की सबसे बड़ी ख्वाहिश थी-एक अच्छी नौकरी और अपनी माँ के लिए एक पक्के घर का सपना पूरा करना। उसने एक छोटे से कॉलेज में दाखिला लिया और पढ़ाई के साथ-साथ पार्ट-टाइम नौकरी भी शुरू की। दिन में पढ़ाई और रात में कैफे में काम करते हुए, उसकी जिंदगी किसी घड़ी के पेंडुलम की तरह चल रही थी।

शुरुआत में सब ठीक चल रहा था, लेकिन फिर शहर की सच्चाई उसके सामने आने लगी। ऑफिस में भेदभाव, दोस्तों की धोखेबाज़ी और लगातार असफलता ने उसके हौसले को तोड़ना शुरू कर दिया। एक दिन, जब उसे अपनी नौकरी से निकाल दिया गया, तो वह पूरी तरह से टूट गई। उसने अपनी माँ को फोन किया और रोते हुए कहा, माँ, शायद मैं इस शहर में टिक नहीं पाऊँगी।

यहाँ सपने टूटते हैं, माँ। ये शहर मेरे लिए नहीं है। माँ ने बड़े धैर्य से कहा, बेटा, सपने टूटते हैं तो उनकी आवाज़ सुनो। वे कहते हैं कि कोशिश अधूरी रह गई। हिम्मत जुटाओ और फिर कोशिश करो। सपनों का टूटना हार नहीं, सबक है।

सुधा ने माँ की बात को दिल से लगा लिया। उसने एक बार फिर खुद को खड़ा किया। इस बार उसने अपने असफलताओं से सीखा और ज्यादा समझदारी से कदम बढ़ाए। धीरे-धीरे, उसकी मेहनत रंग लाई। कई सालों बाद, जब सुधा ने अपनी माँ को शहर बुलाकर एक पक्के घर की चाबी दी, तो उसकी आँखों में खुशी के आँसू थे। उस दिन उसने महसूस किया कि टूटते सपनों की आवाज ही थी जिसने उसे एक नई राह दिखाई।

सपने टूटने पर निराश न हों। वे हमें नए रास्ते और मजबूत इरादे के साथ आगे बढ़ने की सीख देते हैं।

✲ अनिता लांडगे
कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का जीवन चरित्र एवं उन्का कार्यकाल...!

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

जीवन चरित्र

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में मध्यप्रदेश के महु गॉव मे हुआ था । उनके पिताजी का नाम रामजी मालोजी सपकाल था । उनकी माता का नाम भीमाई था । उनकी उम्र 9 साल की थी तब उनकी माता भीमाई का स्वर्गवास हो गया । उनका पालन-पोषण उनकी बुआ और उनके पिताजी ने किया, उनके पिताजी का दुसरा विवाह हुआ । उन्होने अपनी पढ़ाई जारी रखी, उनके पिताजी का स्थानांतरण मुंबई में हुआ ।

मुंबई मे फिर अपनी पढ़ाई शुरू की सन 1907 मे भीमराव रामजी आंबेडकर मेट्रींक की परिक्षा उत्तीर्ण किए। वह पहले विद्यार्थी थे जो उन्होने 10 वी की परिक्षा पास किया । सन 1909 मे 12 वी की परिक्षा पास किया । उनको आर्थिक परिस्थितियो का सामना करना पडा । उनका विवाह रमाई के साथ 1911 मे हुआ । उनको 4 पुत्र और 1 पुत्री की प्राप्ती हुई परन्तु आर्थिक परिस्थिति तथा सामाजिक असुविधा के कारण पुत्र नही रहे । उन्होने पूरा अपना जीवन समाज की शोषित, पिडीतों के उध्दार करने के लिये दिया ।

भीमराव रामजी आंबेडकर तीष्ण बुध्दी, तार्कीक बुध्दि होने से वह क्लॉस मे पहले नंबर से पास होते थे । उनको सयाजीराव गायकवाड की तरफ से छात्रवृत्ती की सहायता देकर कोलंम्बिया युनिवर्सिटी, इंग्लैड मे पढ़ने के लिये भेजा । उनके शिक्षक का सरनेम आंबेडकर था । उनके पिताजी ने भीमराव रामजी आंबेडकर नाम दाखिला मे दर्ज कराया । इंग्लैड के कोलम्बिया युनिवर्सिटी से 1912 मे स्नातक तक की डिग्री हासील की । सन 1915 मे उन्होने कोलंम्बिया युनिवर्सिटी से स्नातकोत्तर की डिग्री हासील की । बॉर एट लॉ में पढ़ाई किया,उन्हाने अमेरिका मे जाकर सामाजिक, आर्थिक,राजनैतिक आदि पुस्तको का अभ्यास किया। उनका कोर्स 8 साल का था परन्तु उन्होने 2 साल 6 महिने मे पूर्ण किया वह सिर्फ 1 पाव और 1 कप दुध पिकर 24 घंटे मे से 20 घंटे पढ़ाई मे लगाते थे ।

कार्यकाल

वहॉं से आने के बाद उनको प्राध्यापक की नौकरी मिली। वह नौकरी करने लगे परन्तु जातिवाद आदि कारणो से उन्हे बहुत ही कठिनाईयों का सामना करना पड़ा उन्होने निर्णय लिया कि मै अपने समाज को यह हक दिलवाकर रहूँगा । मै अपने समाज को स्वंतत्र करूँगा, उन्होने अपने गोर-गरीब समाज को जागृत करने के लिये मूक नायक नामक पत्रिका को प्रकाशित किया। रा राष्ट्रवाद, सामाजिक गतिविधियो को तीव्र करने के लिये सामाजिक तथा धार्मिक कार्यो का निर्माण किया।

उन्होने मुबंई मे महाविद्यालय की स्थापना की, ताकि अपने समाज को पढ़ने की सुविधा प्राप्त हो सके, तथा उन्होने औरंगाबाद मे महाविद्यालय की स्थापना की उन्होने सत्याग्रह किया, ब्रिटिश के सायमन समझौता कमिशन को चिट्टी लिखकर आर्थिक तथा राजनैतिक कार्यो को विस्तार पूर्वक समझाया। जल निती तथा औद्योगिक नीति की सम्पूर्ण हिन्दुस्थान में नीति बनाई । नदियों को जोडने का बॉध बनाया । ब्रिटिश शासनकाल में सम्पूर्ण भारत देश को चलाने के लिए योग्यता के आधार पर कानून मंत्री बने । उन्होने महिलाओं को अपने उत्तराधिकार के लिए सुविधा प्राप्त कराने का प्रावधान रखा । सिंचाई के रास्ते बनाये, बॉध बनवाये, हिन्दुस्थान में कई पत्रिकाओं को प्रकाशित किया।

आर्थिक नीति को सुचारू रूप से चलाने के लिये ब्रिटिश काल मे सन 1935 में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना की । भारतीय रिर्जव बैंक के द्वारा भारतीय रूपयों को चलन मे लाया,भारतीय रूपयों की स्थापना की। आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिये अपने

शासनकाल में महिलाओं को अपनी पढ़ाई तथा कुछ मौलिक अधिकार दिलाने की जीम्मेदारी दी गई परन्तु यह कार्य करने के लिये आर्थिक तथा सामाजिक कठिनाईयों का सामना करना पडा। सामाजिक बुराईयों को खत्म करने के लिये गोलमेज परिषद मे प्रस्ताव रखा परन्तु मान्य नही किया गया।

पुरे भारत देश को चलाने के लिये भारतीय संविधान को बनाने के लिये समिती बनाई गई। डॉ बाबासाहेब आंबेडकर, मौलाना आजाद, रॉव इस तरह से समिती का गठन हुआ। परन्तु पूर्ण जिम्मेदारी डॉ बाबासाहेब आंबेडकर के उपर आ गई उन्होने संविधान को 2 साल 11 महिने 17 दिन मे पूर्ण किया। भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के समक्ष प्रेषीत किया। न्याय, समता, बंन्धुत्व, समानता के आधार पर संवैधानिक रूप से भारतीय संविधान को प्रकाशित किया। भारत की एकता, अखंडता को बनाये रखने के लिये उद्देशिका को पारित किया उन्होने नारा दिया शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो।

महिलाओ को विशेष अधिकार देने के लिये प्रस्ताव रखा परन्तु मान्य नही किया गया। उन्होने कानून मंत्री से इस्तीफा दे दिया। अपने समाज मे कार्य करने के लिये सामाजिक, कार्यो को सक्रिय किया। उन्होने धर्म का अभ्यास किया, बौध्द धर्म, इस्लाम धर्म, कबीरपंथी धर्म का अभ्यास किया।

सन 14 अक्टुबर 1956 में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने 5000 अनुयायियो के साथ बौध्द धम्म की दिक्षा ली। उन्होने 8 दिन मे सम्पूर्ण भारत देश को बौध्द धर्म बनाने का निर्णय लिया।

उन्होने पुस्तको का संपादन किया।

1. द प्राबलम ऑफ रूपी
2. भारत की समस्या
3. ब्रिटिश शासन का इतिहास
4. शिक्षा का अधिकार

दिल्ली मे पत्र परिषद की सभा में सम्मिलित हुये। परन्तु उनकी – शारिरीक अस्वस्थता के कारण 6 दिसंबर 1956 मे स्वर्गवास हो गया। चैत्र भूमी मे उनका महापरिनिर्वाण किया गया।

सन 1991 मे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर को भारत रत्न की उपाधी मिली।

उज्वला वानखेडे
कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक

मां

मां है जन्मदात्री हमारी
प्रथम गुरू का मान है पाती
जीवन का हर पाठ पढ़ाती
कभी न थकती, कभी न रूकती

मां ही सृष्टि, मां ही दृष्टि
मां जीवन की हर धुप-छांव
मां शक्ति है, मां भक्ति है
मां ही मेरी भाग्य विधाता
आंचल ज्यों ममता का सागर
करूणा, त्याग, प्रेम की मूरत मां

तपते जीवन की हरियाली मां
ईश्वर का अनुपम रूप है मां
मां काशी, मथुरा, चारों धाम
वेद पुराण गीता सार
सर्वस्व अर्पण हम पर करती
हम से कभी कुछ नहीं चाहती

शक्ति की अद्भूत मिसाल है मां
जीवन हमारा संवारती, पिला अमृतधारा
मां ही विस्तृत गगन, मां ही धरा
मां चरणों में शत-शत नमन हमारा।

उज्वला वानखेडे
कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक

थिंक पॉजिटिव: सकारात्मक सोच का महत्व

हमारे जीवन की दिशा और गुणवत्ता काफी हद तक हमारी सोच पर निर्भर करती है। सकारात्मक सोच न केवल हमारे मन और मस्तिष्क को सशक्त बनाती है, बल्कि हमारे आस-पास के माहौल को भी उज्ज्वल बनाती है। जब हम सकारात्मक सोचते हैं, तो चुनौतियों का सामना करने की हमारी क्षमता बढ़ जाती है और हम जीवन को एक नई दृष्टि से देख पाते हैं।

सकारात्मक सोच का मतलब यह नहीं है कि हम समस्याओं को अनदेखा करें या केवल अच्छा देखने का नाटक करें। यह सोचने का एक ऐसा दृष्टिकोण है, जिसमें हम हर परिस्थिति में संभावनाओं को देखते हैं और निराशा के बजाय समाधान की ओर बढ़ते हैं।

1. मानसिक स्वास्थ्य में सुधार : सकारात्मक सोच तनाव और चिंता को कम करती है। यह हमारी मानसिक स्थिरता को बढ़ाती है और अवसाद जैसी समस्याओं से बचाने में मदद करती है।

2. शारीरिक स्वास्थ्य पर असर : वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि सकारात्मक सोचने वाले लोग बेहतर प्रतिरक्षा तंत्र रखते हैं और बीमारियों से जल्दी उबरते हैं।

3. संबंधों को मजबूत बनाना : सकारात्मक व्यक्ति अपने आसपास के लोगों को प्रोत्साहित करते हैं। इससे रिश्ते मजबूत बनते हैं और सामाजिक जीवन सुखद होता है।

4. कठिन परिस्थितियों का सामना : जब जीवन में कठिनाई आती है, तो सकारात्मक सोच हमें हार मानने से रोकती है। यह हमें धैर्य और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

कैसे अपनाएं सकारात्मक सोच?

1. आभार प्रकट करें

दिन की शुरुआत और अंत में उन चीजों के लिए आभार व्यक्त करें, जो आपके पास हैं। यह आपको जीवन के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करेगा।

2. स्वास्थ्य का ध्यान रखें

स्वस्थ शरीर में सकारात्मक सोच पनपती है। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और पर्याप्त नींद से मानसिक और शारीरिक ऊर्जा मिलती है।

3. नकारात्मक विचारों को पहचानें और बदलें

जब भी नकारात्मक विचार आएं, उन्हें चुनौती दें। सोचें कि क्या वास्तव में आपकी चिंता वाजिब है, और इसे कैसे हल किया जा सकता है।

4. सकारात्मक लोगों के साथ समय बिताएं

आपके आस-पास के लोग आपकी सोच पर गहरा प्रभाव डालते हैं। सकारात्मक सोचने वाले और प्रेरणादायक लोगों के साथ समय बिताएं।

5. मोटिवेशनल किताबें और सामग्री पढ़ें

प्रेरणादायक कहानियां, लेख और वीडियो सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं और आपके आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं। सकारात्मक सोच एक ऐसा चमत्कारी उपकरण है, जो हर परिस्थिति में हमें नई ऊर्जा और दिशा प्रदान करता है। यह जीवन की चुनौतियों को अवसर में बदलने की क्षमता रखता है। अगर हम सोच में सकारात्मकता लाते हैं, तो न केवल हम अपनी जिंदगी को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं।

सोच बदलो, जीवन बदलेगा।

* सुखराम ब्रम्हे
सामग्री सह भंडार सहायक

एक आखिरी उम्मीद

राहुल की जिंदगी एक लंबी अंधेरी सुरंग जैसी हो गई थी। पिछले कुछ महीनों से उसने महसूस किया था कि उसकी सारी मेहनत बेकार जा रही थी। वह एक छोटे से गाँव से दिल्ली आया था, नौकरी के लिए। शुरुआत में सब कुछ बहुत अच्छा था। मेहनत करने पर उसकी तरक्की भी होने लगी। लेकिन समय के साथ काम का दबाव बढ़ने लगा और धीरे-धीरे हर पहलू में उसकी उम्मीदें टूटने लगीं।

राहुल के पास कभी भी समय नहीं था। जब वह ऑफिस से घर आता, तो थक कर चूर हो जाता। और जब घर आता, तो छोटी-छोटी परेशानियाँ उसे घेर लेतीं। उसकी माँ की तबियत खराब रहती, उसका भाई स्कूल में अच्छे अंक नहीं ला रहा था और वह खुद किसी भी काम में सफलता नहीं पा रहा था। एक दिन ऑफिस में उसे एक बड़ा प्रमोशन मिलने वाला था, लेकिन एक गलती के कारण उसे वह मौका हाथ से चला गया। यह तो जैसे उसके टूटते सपनों की आखिरी कड़ी थी।

उसने सोचा, क्या अब कुछ बचा भी है? और एक दिन घर लौटते हुए, राहुल ने खुद से कहा, क्या अब यह सब छोड़ दूं? क्या अब मुझे हार मान लेनी चाहिए? राहुल बहुत उदास था, पर उस रात उसके मन में कुछ था जो उसे बैठने नहीं दे रहा था।

वह अपनी माँ के पास गया, जो बिस्तर पर लेटी हुई थी। उसकी आँखों में एक अजीब सी ताकत थी, जैसे उसने राहुल को उम्मीद की एक आखिरी किरण दी हो। उसने कहा, राहुल, जब तुम थक जाओ, तब भी उम्मीद मत छोड़ना। यह समय भी गुजर जाएगा। याद रखना, जो अपनी आखिरी उम्मीद नहीं छोड़ता, वही सबसे बड़ा विजेता बनता है।

राहुल की आँखों में आँसू थे, लेकिन उस बात ने उसे एक नई ताकत दी। उसने एक बार फिर खुद को संजीवनी दी। अगले दिन से उसने पूरी मेहनत और लगन से काम करना शुरू किया, लेकिन अब उसके मन में किसी भी काम को अधूरा छोड़ने का नाम नहीं था। कुछ महीनों बाद, राहुल को उस गलती की भरपाई का मौका फिर से मिला। उसने अपना काम पूरी ईमानदारी से किया और इस बार वह प्रमोशन उसके हाथ आया। वह जानता था कि यह सफलता उसे सिर्फ मेहनत से नहीं, बल्कि अपनी माँ की दी हुई आखिरी उम्मीद से

मिली थी।

हमेशा याद रखें, जिंदगी में कई बार ऐसा वक्त आता है जब सब कुछ टूटता नजर आता है, लेकिन यही वक्त होता है जब आखिरी उम्मीद ही हमें जीत दिलाती है।

* जाहिद खान
स्वच्छता निरीक्षक

स्वास्थ के प्रति जागरूकता एक सशक्त जीवन की कुंजी

स्वास्थ मनुष्य का सबसे बड़ा धन है। एक स्वस्थ शरीर और मन से ही जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त की जा सकती है। आज के भागदौड़ भरे जीवन में, जहाँ तनाव, प्रदूषण और अस्वस्थ जीवनशैली आम हो गई है, स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होना न केवल आवश्यक है, बल्कि अनिवार्य भी है। स्वस्थ व्यक्ति न केवल अपनी दिनचर्या को आसानी से निभा सकता है, बल्कि वह मानसिक और भावनात्मक रूप से भी मजबूत होता है।

शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी जरूरी है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता से ही बीमारियों से बचाव संभव है और दीर्घायु जीवन का आनंद लिया जा सकता है।

संतुलित आहारः हमारा खान-पान सीधे हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। विटामिन, खनिज, प्रोटीन, और फाइबर युक्त संतुलित आहार लेना चाहिए। जंक फूड और ज्यादा चीनी या तेल से परहेज करें।

नियमित व्यायामः शारीरिक गतिविधि स्वास्थ्य का आधार है। योग, प्राणायाम, या कोई भी शारीरिक व्यायाम रोजाना 30 मिनट के लिए करना चाहिए। यह हृदय, मांसपेशियों और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है।

तनाव प्रबंधनः तनाव आज के समय में कई बीमारियों की जड़ है। ध्यान (मेडिटेशन), संगीत और समय प्रबंधन से तनाव को नियंत्रित किया जा सकता है।

पर्याप्त नींदः अच्छी नींद शरीर को पुनर्जीवित करती है। दिन में 7-8 घंटे की नींद लेना आवश्यक है।

नियमित स्वास्थ्य जांचः शरीर में किसी भी बीमारी के लक्षणों को पहचानने के लिए समय-समय पर स्वास्थ्य जांच करानी चाहिए।

स्वच्छता और पर्यावरणः व्यक्तिगत स्वच्छता और साफ-सफाई का ध्यान रखना जरूरी है। स्वच्छ पर्यावरण स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है।

स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामूहिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। स्कूलों, कॉलेजों और कार्यालयों में स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को स्वास्थ्य सेवाओं और जागरूकता अभियानों को बढ़ावा देना चाहिए। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का मतलब केवल बीमारियों से बचाव करना नहीं है, बल्कि यह एक बेहतर और सकारात्मक जीवन जीने की प्रक्रिया है। नियमित दिनचर्या, सही आहार और मानसिक संतुलन को अपनाकर हम स्वस्थ जीवन की ओर बढ़ सकते हैं। याद रखें, स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है।

स्वस्थ रहें, खुशहाल रहें!

☆ मो.अफरोज अख्तर
सहायक सह टंकक

समय का सदुपयोग

समय हमारे जीवन का सबसे अनमोल संसाधन है, जिसे हम न तो रोक सकते हैं और न ही वापस ला सकते हैं। यह निरंतर बहती नदी की तरह है, जो कभी ठहरती नहीं। जिस प्रकार एक पौधा सही समय पर देखभाल और पोषण से खिल उठता है, उसी प्रकार समय का सही उपयोग हमारे जीवन को सफल और संतोषजनक बना सकता है। समय प्रबंधन का अर्थ है अपने कार्यों को व्यवस्थित करना और हर पल का सही दिशा में उपयोग करना। यह जीवन को सही मार्ग पर रखने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

समय का महत्व किसी भी धन या संपत्ति से अधिक है। यह हमें अपने जीवन को संवारने और अपने सपनों को साकार करने का अवसर देता है। समय का सही उपयोग व्यक्तिगत विकास और सामाजिक प्रगति दोनों में योगदान करता है। बच्चों और युवाओं को समय के महत्व को समझाना बेहद आवश्यक है ताकि वे अपने जीवन को सफल बना सकें। समय की बर्बादी न केवल हमारे लिए बल्कि हमारे परिवार और समाज के लिए भी नुकसानदायक हो सकती है। इतिहास गवाह है कि समय का सदुपयोग करने वाले लोग महानता की ऊंचाइयों तक पहुंचे हैं।

समय का सही उपयोग करने के लिए हमें अपनी दिनचर्या और प्राथमिकताओं को व्यवस्थित करना चाहिए।

गोल निर्धारित करें : छोटे और बड़े लक्ष्यों को तय करना समय प्रबंधन का पहला कदम है। यह हमें स्पष्ट दिशा देता है और प्रेरित रखता है।

कार्य प्राथमिकता दें : कार्यों की सूची बनाकर और महत्वपूर्ण कार्यों को पहले पूरा करके हम अधिक उत्पादक बन सकते हैं।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें : समय पर सोना, उठना और व्यायाम करना शरीर और मन को संतुलित रखता है। इससे हमारी ऊर्जा और दक्षता बढ़ती है।

समय की बर्बादी से बचें : मोबाइल, सोशल मीडिया और अनावश्यक बातचीत जैसी चीजों से दूरी बनाएं। समय के प्रत्येक क्षण का सही उपयोग करें।

समय का मूल्य वही समझता है जिसने इसे खो दिया हो। कई बार लोग पैसे को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन वे भूल जाते हैं कि पैसा कमाया जा सकता है, पर समय नहीं। समय ने राजा को रंक और रंक को राजा बना दिया है। यह सबसे शक्तिशाली है, जो किसी की भी स्थिति को बदल सकता है। समय ने हमें समृद्धि और खुशी दोनों दी है, लेकिन इसका दुरुपयोग दुःख और असफलता का कारण बन सकता है।

समय का सही उपयोग करने से हम अपने जीवन में अनुशासन ला सकते हैं। यह हमें न केवल सफल बनाता है बल्कि मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है। समय का प्रबंधन करने से हम तनावमुक्त रहते हैं और काम को बेहतर तरीके से कर पाते हैं।

समय जीवन का आधार है। समय का सदुपयोग करके हम अपने लक्ष्यों को हासिल कर सकते हैं और समाज की प्रगति में योगदान दे सकते हैं। समय का सम्मान करना हमारी जिम्मेदारी है। इसलिए, हमें अपनी योजनाओं और कार्यों को समय पर पूरा करने की आदत डालनी चाहिए। याद रखें, समय किसी का इंतजार नहीं करता। आज का काम आज ही करें, क्योंकि समय पर किया गया हर काम सफलता की ओर एक कदम है। समय का सही उपयोग न केवल हमें बल्कि पूरे समाज को उन्नति के मार्ग पर ले जा सकता है।

❊ हेमलता साखरे
वरिष्ठ आशुलिपिक

पत्थर की गूंज

धरती का दिल खोद रहे,
खजाना उसका मोड़ रहे।
मॉयल की खदानें बोल रही,
सपनों की राहें खोल रही।
कभी भूमिगत, कभी भुपृष्ठ,
हर अंश में जीवन का दृष्ट।
मैंगनीज का जो धन अपार,
संघर्ष का है यह उपहार।
खनिकों के श्रम का यह परिश्रम,
धरती को देते हम नवरंग।
काली मिट्टी में छिपा हुआ,
सपनों का सोना, अमिट धरा।
मशीनें गरजतीं, दम भरतीं,
साहस की गाथा हरपल लिखतीं।
यहां हर पत्थर गूंज रहा,
कर्म का गीत हमें सिखा रहा।
मॉयल का जज्बा है अनमोल,
धरती के गर्भ से लाते गोल।
मेटल की चमक से रोशन जहां,
हम बनाएं एक उज्ज्वल आसमां।
यह खदानें हैं विकास की राह,
धरती के वरदान की चाह।
मैंगनीज के संग बढ़ें कदम,
सपनों के उगाएं नए आलम।

अनिल घरडे
सहायक हिंदी अनुवादक

शाम बेच दी है

शाम बेच दी है,
चंद टुकड़ों के लिए,
उस आसमान को जो मेरा था,
अब किराए पर है।
जहां तारे सजते थे,
ख़्वाबों के झूले झूलते थे,
वह गगन अब थक चुका है,
नए मालिक की चाह में।
चाय की वो चुस्कियां,
जो अंधेरे को अपनेपन से भरती थीं,
अब बस एक कप में सिमट गई हैं,
जिंदगी के स्वाद को भूलकर।
नदियों ने साज़िश की,
लहरों ने सब गवा दिया,
जो वक़्त मेरा था,
वो बाज़ार का हो गया।
खिड़की से झांकता चांद,
अब किसी और की खिड़की से
झांकता है,
वो बांसुरी की तानें,
अब मोल भाव में टूट जाती हैं।
पर बेचते-बेचते,
मैंने ख़ुद को पाया,
वो जो गगन मेरा था,
अभी भी दिल में छुपा है।
शाम तो बिक सकती है,
पर वो अहसास नहीं,
जो हर डूबते सूरज के साथ,
मुझमें रौशनी जगा देता है।

हेमलता साखरे
वरिष्ठ आशुलिपिक

गांव की छांव

धूप तेज थी। आसमान पर सूरज मानो आग उगल रहा था। खेतों में काम कर रहे किसान अपने माथे पर गमछा बांधे, मेहनत में जुटे थे। बीच-बीच में वे पसीना पोंछते और पेड़ों की छांव तलाशते। गांव का वह पीपल का पेड़, जिसके नीचे बैठकर बुजुर्ग अपनी कहानियां सुनाते थे, आज भी उतना ही सजीव लगता था। उसके नीचे की मिट्टी ठंडी थी, और वहां का सन्नाटा सुकून भरा। गांव के बच्चे वहीं खेलते, ठंडी हवा में सुस्ताते और कभी-कभी पीपल के बड़े-बड़े पत्तों से पंखा बनाते।

सूरज ढलने को था। रामू, जो पूरे दिन खेतों में हल चलाता रहा था, उस छांव की ओर बढ़ा। वहां पहले से ही कुछ लोग बैठे थे। हर दिन की तरह, आज भी गांव के बुजुर्ग मंगरू काका अपनी कहानियों का पिटारा खोले बैठे थे। काका, आज कौन-सी कहानी सुनाओगे? एक बच्चे ने उत्सुकता से पूछा। आज मैं तुम्हें बताऊंगा उस दिन की बात, जब इस पीपल की छांव ने पूरे गांव को बचाया था,काका ने धीमे से कहा।

सबकी आंखें चमक उठीं। कई साल पहले की बात है, काका ने कहना शुरु किया, गांव में अकाल पड़ा था। पानी की एक-एक बूंद के लिए लोग तरस रहे थे। प्यास से किसान और उनके मवेशी

बेहाल हो गए थे। तब, यह पीपल का पेड़ ही हमारी उम्मीद बना। इसके नीचे एक प्राचीन कुआं था, जिसे हमने साफ किया। कुएं का पानी ठंडा और मीठा था। पूरे गांव ने उसी पानी से अपनी प्यास बुझाई और बच गया।

कहानी सुनते-सुनते बच्चे और बड़े सब गहरी सोच में डूब गए। इस पेड़ की छांव सिर्फ धूप से राहत नहीं देती थी, बल्कि पूरे गांव के इतिहास की गवाह थी। रामू ने धीमे से कहा, काका, यह पेड़ तो हमारे गांव की जान है। इसे कभी काटने नहीं देंगे। सही कहा, मंगरू काका ने मुस्कुराते हुए कहा। पेड़ न हो, तो छांव कहां? और छांव न हो, तो सुकून कहां? उस शाम, गांव के लोग पीपल की छांव में बैठे-बैठे, अपने अतीत को याद कर रहे थे। सूरज ढल रहा था, और आसमान के लाल रंग में उम्मीद की एक नई किरण झलक रही थी।

❊ नितीन रोकड़े
सहायक सह टंकक

भारत की शौर्य गाथा

साल 1971 भारत और पाकिस्तान के बीच का तनाव चरम पर था। बांग्लादेश के स्वतंत्रता संग्राम ने पूरे उपमहाद्वीप को हिला दिया था। भारतीय सेना ने एक गुप्त मिशन शुरू किया था। इस ऑपरेशन का उद्देश्य दुश्मन के ठिकानों को तबाह करना था, जिससे उनकी रसद और रणनीतिक क्षमता को खत्म किया जा सके।

कैप्टन आर्या, भारतीय सेना के एक युवा और होशियार अफसर नेतृत्व के लिए चुने गए। उनके साथ थी एक अनुभवी टीम, जिसमें लेफ्टिनेंट निखिल, संचार विशेषज्ञ अंशु और विस्फोटक विशेषज्ञ कबीर शामिल थे। ऑपरेशन इतना गुप्त था कि इसकी जानकारी केवल कुछ उच्च अधिकारियों तक सीमित थी। मिशन का मुख्य केंद्र बिंदु था पाकिस्तान के सीमा क्षेत्र में स्थित एक महत्वपूर्ण ब्रिज, जो उनके सैनिकों और हथियारों की आपूर्ति का मुख्य जरिया था। अगर इस ब्रिज को नष्ट कर दिया जाता, तो दुश्मन की ताकत काफी हद तक कमजोर हो जाती।

टीम ने ऑपरेशन के लिए पूरी तैयारी कर ली। नक्शे, खुफिया जानकारी और अत्याधुनिक हथियार साथ ले लिए गए। रात के अंधेरे में, वे एक हेलीकॉप्टर से सीमा पार दुश्मन के इलाके में उतरे। दुश्मन के क्षेत्र में घुसना आसान नहीं था। हर कदम पर खतरा था, और हर आवाज़ उनकी जान ले सकती थी।

कैप्टन आर्या और उनकी टीम को दुश्मन की गश्त से बचते हुए जंगलों और नदियों के बीच से गुजरना पड़ा। कई बार ऐसा लगा कि उनकी पहचान हो जाएगी, लेकिन टीम की सूझबूझ और अनुशासन ने उन्हें सुरक्षित रखा। एक रात, जब वे दुश्मन के ठिकानों के पास पहुंचे, तो लेफ्टिनेंट निखिल ने अपने ड्रोन कैमरे की मदद से इलाके की पूरी तस्वीर खींच ली।

ब्रिज पर हमला करने के लिए उन्हें विस्फोटकों को सही स्थान पर लगाना था। कबीर ने पूरे इलाके का निरीक्षण किया और तय किया कि विस्फोटकों को ब्रिज के मध्य और स्तंभों पर लगाया जाएगा। यह एक बेहद जोखिम भरा काम था, क्योंकि ब्रिज के पास दुश्मन के सैनिकों की तैनाती थी। एक रात, जब दुश्मन के गार्ड्स की संख्या कम थी, टीम ने विस्फोटकों को ब्रिज पर लगाया। समय का ध्यान रखते हुए उन्होंने विस्फोट को अलार्म से जोड़ दिया।

अंतिम क्षणों में दुश्मन को उनकी मौजूदगी का आभास हो गया। गोलियों की बौछार शुरू हो गई। कैप्टन आर्या ने अपनी टीम को बचाने के लिए मोर्चा संभाला। कुछ मिनटों तक गोलीबारी चलती रही। लेफ्टिनेंट निखिल ने सुरक्षित वापसी का रास्ता ढूंढा और टीम दुश्मन की पकड़ से बच निकली। जब टीम जंगल में सुरक्षित दूरी पर पहुंची, तो उन्होंने विस्फोट का बटन दबाया। एक गगनभेदी धमाका हुआ, और ब्रिज ध्वस्त हो गया। दुश्मन की आपूर्ति और रणनीतिक क्षमता को भारी नुकसान पहुंचा।

ऑपरेशन सफल रहा। टीम ने न केवल दुश्मन की रणनीतिक ताकत को कमजोर किया, बल्कि भारत की सैन्य क्षमता और साहस का भी परिचय दिया। कैप्टन आर्या और उनकी टीम को इस अद्भुत मिशन के लिए सम्मानित किया गया। भारत के इतिहास में यह साहस, बलिदान, और देशभक्ति की मिसाल यह बन गया। यह उन गुमनाम नायकों की कहानी है, जिन्होंने देश की सुरक्षा के लिए अपनी जान दांव पर लगा दी।

❁ योगेश करमरकर
सहायक सह टंकक

गाँव और शहर

सोहन एक बड़े शहर में रहता था। उसके घर में पैसों की कोई कमी नहीं थी। सोहन धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था। एक बार गर्मी की छुट्टियों में उसके पिता उसे बाहर की दुनिया दिखाने के लिए अपने गाँव ले गए। सोहन के पिता उसको यह समझाना चाहते थे कि आप शहर में कितना अच्छा जीवन जी रहे हो। यहाँ गाँव वालों को देखो कि वह अपना परिवार किस तरह से पालते हैं। जिनके पास पैसे नहीं होते हैं, वें लोग कैसे परेशान रहते हैं।

सोहन वहाँ के रहन-सहन को करीब से समझ सकें, उसके पिता उसे खेतों में ले गए। खेतों के पास छोटे-छोटे घर बने हुए थे, जिसमें उन खेतों में काम करने वाले लोग रहते रहते थे। सोहन एक सप्ताह तक गाँव में रुका। वहाँ पर गाँव के बच्चों के साथ खूब खेला और उनके जानवरों के साथ खूब मौज मस्ती की। पेड़ों पर चढ़ा, कुत्तों के साथ खेला, फल खाये, भेड़ों के साथ खेला। जब एक सप्ताह बीत गया तो वहाँ से वपास आते समय पिता ने सोहन से कहा,सोहन बेटा, देखा आपने गाँव के लोगों के पास कम पैसे होने के कारण, कितना मुश्किल भरा जीवन बिताते हैं। तब बच्चे ने जबाब दिया, नहीं पापा पहले तो आपको मैं धन्यवाद करना चाहता हूँ कि आपने मुझे दिखाया कि अमिर लोग कैसे रहते हैं।

देखिए न हमारे पास तो सिर्फ एक कुत्ता हैं, इनके पास तो दस-दस कुत्ते हैं। हमारे पास तो सिर्फ एक गाय हैं, इनके पास तो कितनी सारी गायें हैं। हमारे पास तो एक भी भेड़ नहीं हैं, इनके पास तो बहुत सारी भेंड़े हैं। हमारे पास तो कार पार्क करने की जगह तक नहीं है। इनके पास तो कितनी सारी जगह और खाली खेत पड़े हैं। इस कहानी का मकसद सिर्फ इतना हैं कि अमीरी सिर्फ देखने के नजरिए से हैं। सच्ची अमीरी समझने के लिए आपको यह सोचना पड़ेगा कि आप क्या खो रहे हैं? वे लोग जो गाँव घर परिवार छोड़कर, अपने खेतों को बेचकर शहर में एक (10 X10) के कमरें में रह कर अपने आपको बहुत अमीर समझ रहे हैं, क्या वें सच में अमीर हैं या फिर वें सिर्फ दिखावा कर रहे हैं।

जीवन में कुछ करने के लिए ऐसा नहीं हैं कि अगर हम अपना घर परिवार छोड़कर दूसरे शहर नहीं जाएंगे तो हम कुछ नहीं कर सकते। यह सिर्फ सोच का फर्क हैं। आप जहाँ हैं, वहीं से कुछ शुरू करो और पूरी शिद्दत और लगन से करो। सफलता एक दिन आपकी कदम चूमेंगी।

* शमा खोब्रागडे
सहायक सह टंकक

नीला बैग

गांव के छोटे से स्टेशन पर हलचल मची हुई थी। सूरज धीरे-धीरे ढल रहा था, और आसमान गुलाबी रंग में रंगा हुआ था। सभी यात्री अपनी-अपनी मंज़िलों की ओर जाने के लिए बेताब थे। वहीं, स्टेशन के एक कोने में एक नीला बैग अकेला पड़ा था। नीला बैग दिखने में साधारण था, लेकिन उसकी चमकदार नीलापन एक अजीब-सा आकर्षण पैदा करता था। स्टेशन के सफाईकर्मी रामू की नज़र उस बैग पर पड़ी। उसने इधर-उधर देखा, लेकिन बैग का मालिक कहीं नहीं दिखा।

किसका होगा ये बैग? रामू ने खुद से पूछा। बैग उठाने के लिए वह झुका, लेकिन मन में एक डर भी था। क्या पता, इसमें कुछ खतरनाक हो! रामू ने बैग को छूते ही महसूस किया कि वह भारी था। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। उसने सोचा कि स्टेशन मास्टर को बताना चाहिए। वह बैग को लेकर स्टेशन मास्टर के पास गया। स्टेशन मास्टर ने बैग को खोलने से पहले पुलिस को बुलाया। पुलिस आई और सभी यात्रियों को एक तरफ कर दिया। हर कोई बैग में छुपे राज़ को जानने के लिए उत्सुक था। पुलिस अधिकारी ने सावधानी से बैग खोला। अंदर देखा तो सभी हैरान रह गए।

बैग में पैसे, गहने और एक डायरी थी। डायरी के पहले पन्ने पर लिखा था: यदि यह बैग आपको मिले, तो इसे पुलिस के हवाले कर दें। ये मेरी मेहनत की कमाई है, जिसे मैंने अपनी बेटी की शादी के लिए बचाया है। मैं बीमार हूं और ट्रेन में बैग भूल गया। डायरी पढ़ते ही सबकी आंखें नम हो गईं। स्टेशन मास्टर ने तुरंत बैग के मालिक का पता लगाने के लिए रेलवे के रिकॉर्ड्स और सीसीटीवी की जांच शुरू कर दी।

कुछ ही घंटों में पता चला कि बैग एक बुजुर्ग किसान रामदीन का है, जो अपनी बेटी के लिए गांव लौट रहा था। रामदीन को बुलाया गया, और जब उसने अपना बैग वापस पाया, तो उसकी आंखों में कृतज्ञता के आंसू थे। उस दिन स्टेशन पर हर कोई मुस्कुरा रहा था। रामू, जिसने बैग सबसे पहले देखा था, गर्व से भर गया। नीला बैग सिर्फ एक साधारण बैग नहीं था; वह ईमानदारी, मेहनत और इंसानियत का प्रतीक बन गया।

❋ नितीन कुकड़े
सहायक सह टंकक

धरती की पुकार

बहुत समय पहले, एक छोटे से गांव के बीचों-बीच एक विशाल पीपल का पेड़ खड़ा था। यह पेड़ उस गांव की पहचान था, और उसके आसपास एक तालाब, हरे-भरे खेत, और पक्षियों का बसेरा था। गांव के लोग धरती को अपनी मां मानते थे और उसका सम्मान करते थे। पर समय बदल रहा था। धीरे-धीरे गांव में आधुनिकता की हवा चलने लगी। मशीनें आईं, और लोगों ने अधिक फसल उगाने के लालच में जंगल काटना शुरू कर दिया।

तालाब सूखने लगा, पक्षी गायब हो गए और पीपल के पेड़ की छांव में भीड़ कम होती गई। धरती की सुंदरता और समृद्धि धीरे-धीरे खत्म हो रही थी। गांव में एक बच्चा था, आरव, जो हमेशा अपने दादा जी के साथ पीपल के पेड़ के नीचे खेला करता था। एक दिन, उसने देखा कि लोग पेड़ को काटने की योजना बना रहे हैं। आरव को यह सुनकर बहुत दुःख हुआ। उसने अपने दादा जी से पूछा, दादाजी, ये लोग पेड़ क्यों काट रहे हैं?

दादा जी ने गहरी सांस लेते हुए कहा, बेटा, इंसान अपनी जरूरतों के लिए धरती को नुकसान पहुंचा रहा है। लेकिन उसे ये समझना होगा कि अगर धरती नहीं बचेगी, तो हम भी नहीं बचेंगे। उस रात आरव को एक सपना आया। उसने देखा कि धरती एक मां के रूप में उसके सामने खड़ी है। उसकी आंखों में आंसू थे।
उसने आरव से कहा, मेरे बच्चे, मैं थक गई हूं। मेरे जंगल कट रहे हैं, मेरी नदियां सूख रही हैं, और मेरा हरा आंचल खोता जा रहा है। मुझे बचाओ, वरना तुम्हारा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। सपने से जागने के बाद, आरव ने तय किया कि वह धरती को बचाने के लिए कुछ करेगा। उसने अपने दोस्तों को बुलाया और उन्हें अपना सपना बताया। बच्चों ने मिलकर गांव के लोगों को जागरूक करने की ठानी।

उन्होंने एक सभा बुलाई और सभी को समझाया कि अगर वे धरती को इस तरह नुकसान पहुंचाते रहे, तो उनकी अगली पीढ़ियां पानी, हवा और हरियाली से वंचित हो जाएंगी। आरव ने जोर देकर कहा, धरती हमारी मां है और हमें उसकी पुकार सुननी होगी। अगर हम उसे बचाएंगे, तो वह हमें बचाएगी। उनकी बातों ने गांववालों का दिल छू लिया। उन्होंने पेड़ को काटने का विचार छोड़ दिया और तालाब को साफ करना शुरू किया। लोग फिर से पेड़ लगाने लगे और धीरे-धीरे गांव में हरियाली लौट आई।

आरव की कोशिशों ने गांव को बचा लिया और धरती फिर से मुस्कुराने लगी। यह कहानी हमें सिखाती है कि अगर हम धरती की पुकार सुनें और उसके लिए कुछ करें तो हम अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं।

* नरेश नायधने
सहायक सह टंकक

जो व्यक्ति अपना लक्ष्य तय नहीं कर सकता, वह जीत भी नहीं सकता।

राजनीति का बदलता स्वरूप

राजनीति, समाज के संगठन और विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। समय के साथ राजनीति का स्वरूप भी बदलता गया है, और आज यह अपने आधुनिक, जटिल और व्यापक रूप में सामने आ रही है। इस लेख में हम राजनीति के बदलते स्वरूप का विश्लेषण करेंगे।

1. पारंपरिक राजनीति से आधुनिक राजनीति :

पारंपरिक राजनीति का उद्देश्य समाज के सामान्य प्रबंधन और नेतृत्व तक सीमित था। यह अधिकतर राजा, महाराजा, या अन्य कुलीन वर्ग के हाथों में होती थी। समय के साथ लोकतंत्र का उदय हुआ और राजनीति जनता-आधारित प्रणाली बन गई। अब नागरिक, अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं।

2. विचारधाराओं का प्रभाव :

अतीत में राजनीति मुख्यतः धर्म, जाति और सामाजिक वर्गों पर आधारित थी। आधुनिक समय में विचारधाराओं जैसे कि लोकतंत्र, समाजवाद, उदारवाद और पूंजीवाद का गहरा प्रभाव पड़ा है। हालांकि जाति और धर्म का प्रभाव आज भी राजनीति में देखा जा सकता है, लेकिन नई पीढ़ी विचारधारा-आधारित राजनीति को प्राथमिकता देती है।

3. प्रौद्योगिकी और डिजिटल युग :

डिजिटल युग में राजनीति का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्म ने जनता और नेताओं के बीच संवाद को सरल और त्वरित बना दिया है। अब राजनीतिक दल और नेता डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर अपनी पहुंच बढ़ाते हैं। ऑनलाइन अभियान, चुनाव प्रचार और लाइव भाषण आम हो गए हैं।

4. युवाओं की भागीदारी :

आधुनिक राजनीति में युवाओं की भागीदारी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। युवा न केवल मतदान में हिस्सा ले रहे हैं, बल्कि वे सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करने और आंदोलन करने में भी सक्रिय हैं। यह बदलाव राजनीति को और अधिक गतिशील और प्रासंगिक बना रहा है।

5. पारदर्शिता और जवाबदेही :

आज के युग में जनता नेताओं से पारदर्शिता और जवाबदेही की अपेक्षा करती है। सूचना का अधिकार (ठख्र) और मीडिया की सक्रियता ने सरकार और नेताओं को अपने कार्यों के प्रति उत्तरदायी बनाया है।

6. चुनौतियां और विवाद :

राजनीति में बदलाव के साथ कई नई चुनौतियां भी सामने आई हैं। भ्रष्टाचार, फेक न्यूज़, डेटा मैनिपुलेशन और राजनीतिक ध्रुवीकरण जैसी समस्याएं राजनीति के स्वरूप को प्रभावित कर रही हैं। राजनीति का बदलता स्वरूप समाज के विकास, तकनीकी प्रगति और वैश्विक प्रभावों का परिणाम है। यह आवश्यक है कि राजनीति अपनी जड़ों को मजबूत बनाए रखते हुए आधुनिक जरूरतों के अनुसार खुद को ढाले। समाज के प्रत्येक वर्ग को यह समझना होगा कि राजनीति में सक्रिय और जागरूक भागीदारी से ही सशक्त लोकतंत्र का निर्माण संभव है।

✲ नितीन मालेवार
सहायक सह टंकक

प्रकृति की चमक

प्रकृति, हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है, जो अपनी अनमोल सुंदरता और अद्वितीयता से मनुष्य को मोहित करती है। यह केवल हमारे जीवन को सजीवता प्रदान नहीं करती, बल्कि मानसिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा का भी स्रोत है। प्रकृति की चमक में सूरज की किरणों से लेकर चाँदनी रात तक, नदियों की मधुर धारा से लेकर पहाड़ों की ऊँचाई तक, और हरे-भरे जंगलों से लेकर रंग-बिरंगे फूलों की महक तक, सब कुछ सम्मिलित है।

प्रकृति की विविधता : प्रकृति की सुंदरता उसकी विविधता में निहित है। पहाड़ों की शांत ऊँचाई, समुद्र की अनंत गहराई, और रेगिस्तानों की सुनहरी बालू सब अपने-अपने ढंग से आकर्षित करते हैं। झरने जब ऊँचाई से गिरते हैं, तो लगता है जैसे धरती पर चाँदी की धारा बह रही हो। जंगलों के पेड़-पौधे, पक्षी और वन्यजीव एक अनूठा संसार रचते हैं, जो मानव को जीवन के वास्तविक स्वरूप का एहसास कराते हैं।

मानव और प्रकृति का संबंध : प्रकृति और मानव का रिश्ता गहरा और अटूट है। मानव का अस्तित्व पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर है। यह हमें हवा, पानी, भोजन और आश्रय प्रदान करती है। परंतु आज आधुनिकता की दौड़ में मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है। उद्योगों, शहरीकरण और प्रदूषण के कारण प्रकृति की सुंदरता और संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

प्रकृति का संरक्षण : प्रकृति की चमक और सौंदर्य को बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। वृक्षारोपण, जल संरक्षण, और पर्यावरण को स्वच्छ रखना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। हमें न केवल प्रकृति से लेना चाहिए, बल्कि उसे कुछ वापस भी देना चाहिए। यह तभी संभव है जब हम अपनी जीवनशैली में बदलाव लाएँ और प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनें।

प्रकृति की चमक केवल आँखों के लिए सुखद नहीं, बल्कि आत्मा के लिए भी पोषण है। इसे बचाना, सहेजना और इसका सम्मान करना हर व्यक्ति का धर्म है। प्रकृति के बिना जीवन अधूरा है और इसकी रक्षा से ही मानव सभ्यता का अस्तित्व संभव है। आइए, हम सब

मिलकर इस अद्भुत धरोहर को संरक्षित करने का प्रण लें।

❁ नीता गुजर
सहायक सह टंकक

सपनों का सौदागर

गाँव के मुख्य चौराहे पर एक साधारण-सा दिखने वाला बूढ़ा व्यक्ति रोजाना शाम को आता था। उसके हाथ में एक पुराना सा झोला होता था और वह ज़ोर-ज़ोर से पुकारता, सपने! सुनहरे सपने! खरीद लो, बेच लो, जो चाहो!

गाँव के लोग उसे सपनों का सौदागर कहते थे। वह हर किसी को अजीब लगता था, क्योंकि भला सपने भी कोई बेचने की चीज़ हैं? फिर भी, बच्चे, बूढ़े, और जवान उसकी बातें सुनने के लिए उसके पास जमा हो जाते। एक दिन, गाँव का एक लड़का, जिसका नाम राजू था, सौदागर के पास गया। उसकी आँखों में उदासी थी।

उसने पूछा, बाबा, क्या आप मुझे एक सपना बेच सकते हैं? सौदागर मुस्कुराया और बोला, बिलकुल, बेटा। लेकिन पहले बताओ, तुम किस तरह का सपना खरीदना चाहते हो? राजू ने धीरे से कहा, मैं बड़ा आदमी बनना चाहता हूँ। हमारे पास पैसे नहीं हैं, और मेरे माता-पिता दिन-रात मेहनत करते हैं। मैं उन्हें खुश देखना चाहता हूँ।

क्या आपके पास ऐसा सपना है? सौदागर ने अपनी झोली खोली। उसमें से उसने एक छोटी शीशी निकाली।

वह शीशी खाली थी, लेकिन वह उसे राजू को देकर बोला, यह लो, यह तुम्हारे सपने की चाबी है। इसे हर दिन देखना और मेहनत करना। सपना तुम्हारा जरूर पूरा होगा। लेकिन ध्यान रखना, सपना तभी सच होगा जब तुम हर दिन कुछ नया सीखोगे और अपना लक्ष्य याद रखोगे।

राजू ने शीशी को संभाल लिया और घर लौट गया। उसने उस दिन से पढ़ाई में मेहनत करनी शुरू कर दी। धीरे-धीरे उसने अपने गाँव में सबसे होशियार लड़के के रूप में नाम कमाया। उसने पढ़ाई में अच्छे नंबर लाए और आगे चलकर बड़ा इंजीनियर बन गया। कुछ सालों बाद, राजू ने अपने गाँव लौटकर सौदागर को ढूंढा।

उसने पूछा, बाबा, आपकी दी हुई उस शीशी में क्या था? क्या वह सच में जादुई थी? सौदागर हँसते हुए बोला, बेटा, उस शीशे में कुछ नहीं था। असली जादू तुम्हारे अंदर था। मैंने बस तुम्हें तुम्हारे सपने पर विश्वास करने का एक कारण दिया।

सपने तभी पूरे होते हैं जब हम उन पर विश्वास करें और उनके लिए कड़ी मेहनत करें। अपने अंदर के आत्मविश्वास को पहचानना

❋ सोनू वासनिक
कुक

दूध का दाम

गाँव के कोने में बसे छोटे से घर में रामलाल और उसका परिवार रहता था। रामलाल एक मेहनती किसान था, और उसके पास कुछ गायें थीं, जिनसे वह दूध निकालकर अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। रामलाल अपनी गायों से बेहद प्रेम करता था और उनकी देखभाल में कोई कसर नहीं छोड़ता था।

एक दिन, रामलाल का बेटा राजू स्कूल से लौटकर आया और उदास होकर बोला, पिताजी, मास्टर जी ने कहा कि अगर इस महीने फीस नहीं जमा की, तो स्कूल से नाम काट दिया जाएगा। रामलाल ने गहरी सांस ली। खेती-बाड़ी से हुई कमाई पिछले महीने सूखे के कारण काफी कम थी। उसने सोचा कि शायद दूध बेचकर पैसे जुटाए जा सकते हैं।

अगले दिन, रामलाल शहर के बाजार गया। वह एक दूध की दुकान पर गया और मालिक से बोला, भाई साहब, यह शुद्ध गाय का दूध है। इसे बेचने का दाम क्या मिलेगा? दुकानदार ने दूध चखा और बोला, दूध तो अच्छा है, लेकिन मैं ज्यादा पैसे नहीं दे सकता। बाजार में बहुत प्रतिस्पर्धा है। मैं तुम्हें सिर्फ 20 रुपये लीटर दे सकता हूं। रामलाल को यह सुनकर निराशा हुई।

वह जानता था कि यह दाम उसके दूध की गुणवत्ता के हिसाब से बहुत कम है। उसने सोचा, मेहनत का सही मूल्य क्यों नहीं मिलता? फिर वह दूसरे दुकानदार के पास गया। वहाँ भी उसे वही जवाब मिला। अंत में, रामलाल घर लौट आया, हाथ में कुछ ही पैसे थे।

उसने अपनी पत्नी से कहा, हमारी मेहनत का कोई कद्र नहीं करता। हमें दूध का सही दाम नहीं मिला। उसकी पत्नी ने मुस्कुराकर कहा, रामलाल, चिंता मत करो। जो सही है, वही मिलेगा। हमें अपना काम ईमानदारी से करते रहना चाहिए। कुछ दिन बाद, गाँव में एक बड़ा मेला लगा।

रामलाल ने सोचा, क्यों न मैं दूध को सीधे मेले में बेचूं? वहाँ मुझे शायद सही ग्राहक मिल जाए। उसने मेले में एक छोटी-सी दुकान लगाई और अपने दूध को बेचने लगा। उसने ग्राहकों को बताया कि यह शुद्ध और ताज़ा दूध है। धीरे-धीरे, लोग उसकी ईमानदारी और दूध की गुणवत्ता को समझने लगे। कुछ ही घंटों में उसका सारा दूध बिक गया, और उसे पहले से ज्यादा पैसे मिले। उसने खुशी-खुशी घर लौटकर अपने बेटे की स्कूल फीस भर दी।

इस कहानी से यह सीख मिलती है कि ईमानदारी और मेहनत से किया गया काम कभी व्यर्थ नहीं जाता। अगर आप अपने काम में सच्चाई और मेहनत रखते हैं, तो आपको उसका उचित मूल्य जरूर मिलता है।

✲ विजय कांबले
टी. आर. वर्कर

भारत का सूरज

प्राचीन काल की बात है, जब भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। इसकी समृद्धि, ज्ञान और सभ्यता का प्रकाश पूरी दुनिया में फैलता था। लेकिन समय के साथ, भारत को कई कठिनाइयों और संघर्षों का सामना करना पड़ा। विदेशी आक्रमणकारियों ने इसकी स्वतंत्रता छीन ली, और अंधकार का एक लंबा दौर शुरू हुआ परंतु भारत की आत्मा अडिग थी।

उसकी मिट्टी में बहादुरी, त्याग और बलिदान के बीज सदियों से बोए गए थे। उस दौर में, जब हर ओर निराशा और पराधीनता का अंधकार था, एक नया सूरज उगने को तैयार था। इस कहानी के नायक का नाम था अर्जुन, एक युवा किसान का बेटा। अर्जुन की आंखों में अपने देश की स्वतंत्रता का सपना था। वह अक्सर अपने पिता से कहता, पिता जी, हम अपनी धरती पर पराए झंडे क्यों लहराने देते हैं? क्या यह धरती हमारी नहीं? उसके पिता मुस्कुराते और कहते, बेटा, जब भारत का सूरज उगेगा, तब यह अंधेरा मिट जाएगा।

अर्जुन ने पढ़ाई के साथ-साथ अपनी मिट्टी और उसके इतिहास को समझने का प्रयास किया। उसने महात्मा गांधी, भगत सिंह और सुभाष चंद्र बोस जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों की कहानियाँ पढ़ीं। ये कहानियाँ उसकी प्रेरणा बन गईं।

एक दिन, उसके गांव में स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक सभा आयोजित हुई। अर्जुन ने पहली बार अपने भाषण में कहा, भारत का सूरज तब तक नहीं उगेगा जब तक हर नौजवान अपनी जिम्मेदारी को नहीं समझेगा। हमें एकजुट होकर लड़ाई लड़नी होगी। उसकी बातें गांववालों के दिलों को छू गईं और वे भी संग्राम में शामिल होने को तैयार हो गए।

अर्जुन ने सत्याग्रह में हिस्सा लिया, जेल की कठिनाइयों को सहा, लेकिन उसके हौसले कभी कमजोर नहीं हुए। उसकी दृढ़ता और साहस ने उसके गांव को ही नहीं, आसपास के क्षेत्रों को भी जागृत किया। धीरे-धीरे, यह आंदोलन राष्ट्रीय स्तर पर फैल गया। आखिरकार, 15 अगस्त 1947 का दिन आया। देश ने लंबे संघर्ष के बाद स्वतंत्रता प्राप्त की।

भारत का सूरज सचमुच उग चुका था। अर्जुन ने अपने पिता से कहा, पिता जी, आज हमारी धरती पर हमारा झंडा लहरा रहा है। भारत का सूरज अब कभी नहीं डूबेगा। हमारे भीतर साहस, त्याग और एकता का दीप जलता रहेगा, तब तक भारत का सूरज चमकता रहेगा। यह केवल एक कहानी नहीं, बल्कि हर भारतीय के हृदय की सच्चाई है।

❋ अंकुर पाली
टी. आर. वर्कर

खनन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग

खनन उद्योग (Mining Industry) मानव सभ्यता का एक अहम हिस्सा रहा है। यह उद्योग न केवल आर्थिक विकास का आधार है, बल्कि अनेक उद्योगों की रीढ़ भी है। खनिज संसाधनों की खोज, दोहन और परिशोधन एक अत्यंत जटिल प्रक्रिया है जिसमें सुरक्षा, लागत, समय और पर्यावरणीय संतुलन जैसे कई पहलुओं का ध्यान रखना पड़ता है। इन सभी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, आधुनिक तकनीकी प्रगति–विशेषकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI)–खनन उद्योग में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है।

AI तकनीक के माध्यम से अब खनन अधिक सुरक्षित, दक्ष और लागत प्रभावी होता जा रहा है। AI तकनीक खनन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर रही है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का परिचय :

AI यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कंप्यूटर सिस्टम्स द्वारा मानव–समान बुद्धिमान व्यवहार का अनुकरण है। इसमें मशीन लर्निंग (ML), डीप लर्निंग (DL), न्यूरल नेटवर्क्स, कंप्यूटर विज़न और नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) जैसी तकनीकों का उपयोग होता है।

खनन जैसे जटिल और जोखिमपूर्ण क्षेत्र में AI का उपयोग कई तरह से किया जा सकता है,

जैसे :

- डाटा विश्लेषण एवं पूर्व सूचना।
- मशीनों का स्वत: संचालन
- सुरक्षा निगरानी
- आपूर्ति श्रृंखला का प्रबंधन
- पर्यावरणीय प्रभाव का मूल्यांकन

खनन प्रक्रिया और चुनौतियाँ :

खनन प्रक्रिया को मुख्यतः निम्न चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

- खोज (Exploration)
- निकासी (Extraction)
- प्रसंस्करण (Processing)
- परिवहन (Transportation)
- पर्यावरणीय पुनर्वास (Rehabilitation)

इनमें अनेक चुनौतियाँ सामने आती हैं :

- भूमिगत खनन में दुर्घटनाओं का जोखिम
- संसाधनों की अनिश्चितता
- मशीनरी की असफलता
- लागत वृद्धि
- पर्यावरणीय हानि

AI इन चुनौतियों का समाधान प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

AI इन क्षेत्रों में मदद करता है:

अ) भू-डाटा विश्लेषण :

AI एल्गोरिदम बड़े पैमाने पर भूगर्भीय डाटा का विश्लेषण कर खनिजों की संभावित मौजूदगी का अनुमान लगाते हैं। इससे ड्रिलिंग की आवश्यकता कम हो जाती है।

ब) रिमोट सेंसिंग :

सैटेलाइट या ड्रोन द्वारा प्राप्त चित्रों का विश्लेषण कर AI खनिज समृध्द क्षेत्रों की पहचान करता है।

स) पूर्व सूचना मॉडल :

Machine Learning के आधार पर यह तकनीक बताती है कि किस क्षेत्र में कौन-से खनिज पाए जाने की संभावना अधिक है।

खुदाई एवं निकासी में AI का योगदान :

खनन में सबसे महत्वपूर्ण चरण है-खनिजों की निकासी। इसमें AI की मदद से कार्य अधिक कुशल और सुरक्षित होता है।

अ) ऑटोमेटेड मशीनरी :

AI संचालित ड्रिलिंग मशीनें, ट्रक और लोडर अब मानव हस्तक्षेप के बिना काम कर सकते हैं। इससे श्रमिकों की सुरक्षा बढ़ती है और कार्य दक्षता भी।

ब) रीयल-टाइम डेटा मॉनिटरिंग :

सेंसर आधारित तकनीक से खनन मशीनों की स्थिति, गहराई, दबाव, तापमान इत्यादि की जानकारी मिलती है, जिससे अचानक खराबी या दुर्घटना की आशंका कम होती है।

स) रोबोटिक माइनिंग :

दुर्गम या अत्यंत खतरनाक क्षेत्रों में रोबोटिक मशीनों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे मानव जीवन की सुरक्षा होती है।

प्रसंस्करण और ग्रेडिंग में AI

खनन के बाद खनिजों को प्रसंस्कृत किया जाता है ताकि शुद्ध खनिज प्राप्त किया जा सके। इसमें AI की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

अ) ग्रेड कंट्रोल :

AI एल्गोरिदम खनिज की गुणवत्ता (Grade) का तत्काल विश्लेषण करते हैं जिससे अच्छी गुणवत्ता वाले अयस्क को प्राथमिकता दी जाती है।

ब) मशीन विज़न:

कंप्यूटर विज़न तकनीक द्वारा खनिज के कणों को पहचाना जाता है और स्वचालित तरीके से उनका वर्गीकरण किया जाता है।

स) ऊर्जा दक्षता:

AI-आधारित सिस्टम यह निर्धारित करते हैं कि किन प्रक्रियाओं में अधिक ऊर्जा लग रही है और कहां पर दक्षता बढ़ाई जा सकती है।

सुरक्षा प्रबंधन में AI की भूमिका :

खनन में दुर्घटनाओं की संभावनाएं अधिक होती हैं। AI इस क्षेत्र में प्रमुख बदलाव ला रहा है :

अ) प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स :

सेंसर और कैमरों से एकत्र डाटा के विश्लेषण द्वारा AI संभावित दुर्घटनाओं की पूर्व सूचना दे सकता है।

ब) रीयल-टाइम लोकेशन ट्रैकिंग :

श्रमिकों की स्थिति का निरंतर आकलन किया जाता है, जिससे आपातकालीन स्थिति में त्वरित सहायता संभव हो पाती है।

स) गैस डिटेक्शन :

AI आधारित सेंसर जहरीली गैसों का पता लगाकर अलार्म जारी करते हैं।

द) PPE जाँच :

कंप्यूटर विजन से यह सुनिश्चित किया जाता है कि सभी श्रमिक उचित सुरक्षा उपकरण पहन कर कार्य कर रहे हैं।

पर्यावरण संरक्षण में AI का योगदान :

खनन का पर्यावरण पर प्रभाव अक्सर नकारात्मक होता है। AI इन प्रभावों को कम करने में सहायक है:

अ) पर्यावरणीय निगरानी :

AI आधारित सेंसर व ड्रोन वायु, जल और मृदा की गुणवत्ता की निगरानी करते हैं।

ब) पुनर्वास योजना :

AI यह विश्लेषण करता है कि खनन समाप्ति के बाद किस प्रकार भूमि को पुनर्स्थापित किया जा सकता है।

स) कार्बन उत्सर्जन निगरानी :

AI ऊर्जा खपत और उत्सर्जन का डाटा एकत्र कर कंपनियों को ग्रीन हाउस गैसों को कम करने की रणनीति सुझाता है।

आपूर्ति श्रृंखला और लॉजिस्टिक्स में AI

खनिजों की ढुलाई और आपूर्ति श्रृंखला में भी AI का बड़ा योगदान है:

अ) रूट ऑप्टिमाइजेशन :

AI सबसे कम समय और लागत वाला परिवहन मार्ग सुझाता है।

ब) इन्वेंटरी मैनेजमेंट :

AI तकनीक मांग और आपूर्ति के अनुसार इन्वेंटरी का प्रबंधन करती है।

स) ब्लॉकचेन + AI :

खनिजों की उत्पत्ति और पूरी सप्लाई चेन में पारदर्शिता बनाए रखने हेतु इन दोनों तकनीकों का संयोजन किया जा रहा है।

भारत में AI और खनन का भविष्य

भारत खनिज संसाधनों से समृद्ध देश है, परंतु पारंपरिक खनन तकनीकों के कारण उत्पादकता और सुरक्षा में बाधाएं आती हैं। सरकार डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया और AI for All जैसी पहलों के माध्यम से AI को बढ़ावा दे रही है।

चुनौतियाँ:

- डेटा की कमी
- प्रशिक्षित जनशक्ति की आवश्यकता
- निवेश की आवश्यकता
- नीति एवं नियमन का अभाव

समाधान:

- निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की साझेदारी
- AI प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना
- डेटा साझा करने की पहल
- पारदर्शी नीति निर्माण

AI ने खनन उद्योग को पहले से अधिक स्मार्ट, सुरक्षित और पर्यावरण-संवेदनशील बना दिया है। यह तकनीक खनिजों की खोज से लेकर उनकी ढुलाई तक हर चरण में नवाचार लेकर आ रही है। भविष्य में AI के साथ-साथ अन्य उभरती तकनीकें-जैसे IoT, Blockchain, और Big Data-खनन को एक पूरी तरह से डिजिटल, ऑटोमेटेड और टिकाऊ प्रक्रिया में परिवर्तित कर देंगी।

संकटराम ब्रम्हवंशी
सहायक सह हिंदी अनुवादक

हमारी शान है हिन्दी...

भारतवर्ष की विविध संस्कृति की जान है हिंदी,
यहां के विशाल साहित्य की पहचान है हिंदी।
सम्पूर्ण विश्व में है चर्चा हमारी राजभाषा की,
हमारी आन, बान, शान हमारी जान है हिंदी।।

हिंदुस्तान है महान और महान है हिंदी,
प्रत्येक हिंदुस्तानी का स्वाभिमान है हिंदी।
जैसे बोली जाती है वैसे ही लिखी भी जाती है,
लिखने पढ़ने में बहुत ही आसान है हिंदी।।

हर भारतवासी के मस्तक का ताज है हिंदी,
हमारे विश्वगुरु बनने का आगाज है हिंदी।
अनेकों भाषाएं दुनिया में बोली जातीं हैं मगर,
दुनिया की सभी भाषाओं की सरताज़ है हिंदी।।

हमारे प्यार का, तकरार का अंदाज़ है हिंदी,
हमारे जीवन का सबसे सुरीला साज़ है हिंदी।
हमारे रंग, रूप, जाति, धर्म चाहे हों अलग,
हमारी विविधता में एकता का राज़ है हिंदी।।

साधु और लकड़हारे

एक समय की बात है। ईश्वरपुर नामक गाँव में एक लकड़हारा रहता था। जोकि बहुत गरीब था। किसी तरह से उसका और उसके परिवार का जीवन, लकड़ियाँ बेचकर व्यतीत होता था। लकड़हारा प्रतिदिन लकड़ियाँ काटता और इकट्ठा करता। दूसरे दिन उसे बाजार जाकर बेच आता, जिससे उसे कुछ पैसे मिल जाते थे। उन्ही पैसों से उसके घर का गुजारा बहुत मुश्किल से चलता था।

अचानक से एक रात लकड़हारे के घर पर चार साधु महात्मा आए। जिन्हें देख लकड़हारा आश्चर्यचकित हो उठा। सभी साधुओं ने एक-एक करके अपना नाम लकड़हारे को बताया। पहले साधु ने बोला मेरा नाम धन हैं,दूसरे ने बोला मेरा नाम वैभव हैं,तीसरे ने बोला मेरा नाम सफलता हैं,और चौथे ने बोला मेरा नाम श्रम हैं। आज रात हम लोग आप के घर पर भोजन करना चाहते हैं।

लकड़हारे ने साधु महात्मा से बोला महाराज हम बहुत गरीब हैं। हमारे पास आप सभी को खिलाने का पर्याप्त भोजन नहीं हो पाएगा। आप बताओ हमें क्या करना चाहिए, साधुओ ने कहा ठीक हैं, आपके पास हम सभी को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं हैं तो कोई बात नहीं, हम चारों में से कोई एक आज आपके घर पर भोजन करेगा। लेकिन ध्यान रहें, हम चारों में से जिसे आप अपने घर पर आमंत्रित करोगे वह अपने नाम जैसा प्रभाव लेकर आपके घर में आएगा।

आप हमें बताओ सबसे पहले किसको आमंत्रित करना चाहते हो। लकड़हारा चिंता में पड़ गया और सोचने लगा पहले किसको आमंत्रित करें? क्योंकि धन, वैभव, सफलता और श्रम चारों ही हर किसी के लिए जरूरी होता हैं। लकड़हारा कुछ समय के लिए अपने घर में गया और अपने पत्नी से पूछा, दोनों ने आपस में कुछ देर विचार विमर्श करने के बाद निश्चय किया कि जिसकी वजह से हमारा घर चलता हैं, उस साधु को हमें पहले बुलाना चाहिए।

फिर लकड़हारा अपने घर से बाहर आया और सबसे पहल श्रम आमंत्रित किया। जैसे ही श्रम ने घर के अंदर अपने कदम रखे, बाकी के तीनों साधु धन,वैभव और सफलता भी अंदर आने लगे। यह सब देख लकड़हारे ने साधुओं से पूँछ, कि महाराज मै कुछ समझा नहीं, अभी तो आपने कहा था कि कोई एक भोजन के लिए आएगा। फिर तीनों साधुओं ने लकड़हारे को समझाया कि जिस घर में श्रम रहता हैं, जिस घर में मेहनत और लगन होती हैं।

वहाँ पर हम तीनों धन, वैभव और सफलता अपने आप आ जाते हैं। नैतिक शिक्षा श्रम के द्वारा आप धन, वैभव और सफलता के अलावा और बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। इसलिए हमें श्रम, मेहनत से पीछे नहीं भागना चाहिए।

* **लक्ष्मी चौबे**
पी.आर.वर्कर

मॉयल समाचार पत्रो में...!

मुख्यमंत्री ने मॉयल की तिरोड़ी खदान को किया पुरस्कृत

मॉयल लिमिटेड भरवेली में योगा कार्यक्रम का आयोजन

मॉयल ने वित्तीय वर्ष 2025 में सर्वश्रेष्ठ निष्पादन किया

मुख्यमंत्री द्वारा मॉयल की तिरोडी खदान को सम्मानित किया गया

वित्त वर्ष 2025 में मॉयल का लाभ 30 प्रतिशत बढ़ा

राष्ट्र पत्रिका

▸ 21 जनवरी 2025

मॉयल सीएमडी के हस्ते उत्कृष्ट कामगार सम्मानित

मॉयल लिमिटेड द्वारा दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का वितरण

समावेशी विकास की दिशा में एक और कदम

मॉयल ने वित्तीय वर्ष 2025 में सर्वश्रेष्ठ निष्पादन किया

मॉयल ने वित्त वर्ष जनवरी में रिकार्ड उत्पादन और बिक्री हासिल किया

मॉयल समाचार पत्रो में...!

मॉयल में श्रमिक दिवस पर कामगार कर्मचारी किए गए सम्मानित

मॉयल के प्रगति में श्रमवीरों का महत्वपूर्ण योगदान - भाटी

सम्मान कार्यक्रम के माध्यम से उनको प्रोत्साहन देना -विवेक

मॉयल लिमिटेड भरवेली खदान में हिंदी प्रचार-प्रसार कार्यक्रम अंतर्गत नुक्कड़ नाटक का सफल आयोजन

विधायक श्रीमती मुंजारे की खान प्रबंधक से सौजन्य भेंट

मॉयल द्वारा बालाघाट के बाद गढ़चिरोली में दिव्यागों को उपकरण वितरित

मॉयल टाइगरमैन ट्रायथलॉन और डुएथलॉन 2025 का 9 फरवरी 2025 को शानदार सफलता के साथ समापन

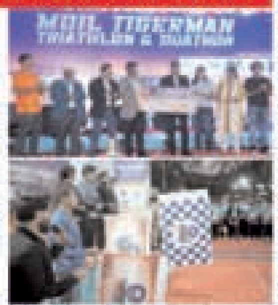

मॉयल लिमिटेड द्वारा दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का वितरण

समावेशी विकास की दिशा में एक और कदम

मॉयल ने फरवरी माह में किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

मॉयल सीएसआर योजना में सामाजिक जिम्मेदारी निभा रहा है-सिंह

मॉयल द्वारा 410 दिव्यांगों को सामग्री वितरित

मॉयल ने सीएसआर के अंतर्गत 42 सीटर बस भेंट दिया

बालाघाट खनिज विभाग को बोलेरो वाहन भी दिया

यादगार पल

यादगार पल

उठो, जागो और तब तक
मत रुको जब तक लक्ष्य
की प्राप्ति ना हो जाये।